सम्पादकीय युगशक्ति गायत्री को जनजीवन में प्रतिष्ठित करने से ही होगी सतयुग की वापसी 2

गायत्री जयंती पर्व समारोहों में युग निर्माणी आस्थाओं का पोषण 5

शान्तिकुञ्ज में शिक्षक गरिमा शिविर श्रृंखला सम्पन्न 18 राज्यों से आए 2500 शिक्षक लाभान्वित हुए 7

युवा चेतना शिविर, छत्तीसगढ़ 7

गायत्री जयंती पर युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में नवयुग की सृजन चेतना के दिव्य दर्शन 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

मध्य प्रदेश

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news@awgp.org

1 जुलाई 2025

वर्ष : 38, अंक : 01

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 जून 2025

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

प्रज्ञावतार की पुकार और हमारी गुरुदक्षिणा

प्रत्येक जाग्रत् आत्मा को यह अनुभव करना चाहिए कि यह परिवर्तन की परम पुनीत वेला है। अवांछनीयता की तमिस्रा अब-तब में समाप्त होने जा रही है। नवयुग का अरुणोदय होने में देर नहीं। उदीयमान आलोक प्रज्ञावतार है। इसके प्रकाश में हर किसी की आँखें वस्तुस्थिति को देख-समझ सकने में समर्थ होंगी।

जाग्रत् आत्माओं की हर महत्त्वपूर्ण अवसर पर शानदार भूमिका रही है। प्रस्तुत युग संध्या में वे निष्क्रिय बने बैठे रहें, यह हो ही नहीं सकता। प्रत्येक देवमानव को इस पुनीत पर्व पर अपनी उपयुक्त भूमिका निभानी होगी, इसके लिए महाकाल की प्रेरणा उन्हें विवश करेगी। जो आनाकानी करेंगे, वे आत्म-ताड़ना का दुसह दुःख सहेंगे।

युग निर्माण परिवार के प्राणवान परिजनों को इन दिनों सृजन शिल्पी की भूमिका निभानी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि भौतिक ललक लिप्साओं पर नियंत्रण किया जाए। लोभ, मोह के बंधन ढीले किये जाएँ। संकीर्ण स्वार्थपरता को हल्का किया जाए। पेट और प्रजनन भर के लिए जीवन की सम्पदा का अपव्यय करते रहने की आदत को मोड़ा-मरोड़ा जाए। औसत भारतीय स्तर का निर्वाह पर्याप्त समझा जाए। महत्त्वाकांक्षाओं की दिशा बदली जाए। वासना, तृष्णा और अहंता के आवेश शिथिल किये जाएँ। इसी तरह के परिवर्तन से युगधर्म के निर्वाह के लिए कुछ बचत हो सकती है।

ब्राह्मणत्त्व और देवत्व की गरिमा स्वीकार करने और उच्चस्तरीय आदर्शों को व्यवहार में उतारने के लिए साहस जुटाने का यही अवसर है, उसे चूक नहीं जाना चाहिए। युग पर्व के विशेष उत्तरदायित्वों की अवमानना करने वाले जीवन्त प्राणवानों को चिरकाल तक पश्चाताप की आग में जलना पड़ता है। देवमानवों की बिरादरी में रहकर कायरता के व्यंग्य, उपहास सहना जितना कठिन पड़ता है, उतना उच्च प्रयोजन के लिए त्याग-बलिदान का जोखिम उठाना नहीं। जिनकी अन्तरात्मा में ऐसी अन्तःप्रेरणा उठती हो, वे उसे महाकाल प्रेरित युग चेतना का आह्वान-उद्‌बोधन समझें और तथाकथित बुद्धिमानों और स्वजनों की उपेक्षा करके भी प्रज्ञावतार का अनुकरण करने के लिए चल पड़ें। इसमें उन्हें प्रथमतः ही प्रसव पीड़ा की तरह कुछ अड़चन पड़ेगी, पीछे तो सब कुछ शुभ और श्रेय ही दृष्टिगोचर होगा।

समयदान : ज्ञानयज्ञ के लिए समयदान, यही है प्रज्ञावतार की जाग्रत् आत्माओं से याचना। उसे अनसुनी न किया जाए। जीवन के प्रस्तुत क्रिया कलापों पर नये सिरे से विचार किया जाए और लिप्सा में निरत जीवन-क्रम में साहसिक कटौती करके उस बचत को युग देवता के चरणों पर अर्पित किया जाए। जो पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त हो चुके हैं, जिन पर कुटुम्बियों की जिम्मेदारियाँ सहज ही हलकी हैं, जिनके पास संचित पूँजी के सहारे निर्वाह क्रम चलाते रहने के साधन हैं, उन्हें तो इस सौभाग्य के सहारे परिपूर्ण समयदान करने की ही बात सोचनी चाहिए। वानप्रस्थों की, परिव्राजकों की पुण्य परम्परा की अवधारणा ऐसे ही सौभाग्यशालियों के लिए है। जो जिस भी परिस्थिति में हों, समयदान की बात सोचें और उस अनुदान को नवजागरण के पुण्य प्रयोजन में अर्पित करें।

> **जाग्रत् आत्माओं से आह्वान**
>
> **जिनकी अन्तरात्मा में ऐसी अन्तःप्रेरणा उठती हो, वे उसे महाकाल प्रेरित युग चेतना का आह्वान-उद्‌बोधन समझें और तथाकथित बुद्धिमानों और स्वजनों की उपेक्षा करके भी प्रज्ञावतार का अनुकरण करने के लिए चल पड़ें। इसमें उन्हें प्रथमतः ही प्रसव पीड़ा की तरह कुछ अड़चन पड़ेगी, पीछे तो सब कुछ शुभ और श्रेय ही दृष्टिगोचर होगा।**

प्रतिभादान : प्रतिभा, कुशलता, विशिष्टता से सम्पन्न कई विभूतिवान व्यक्ति इस स्थिति में होते हैं कि अनिवार्य प्रयोजनों में संलग्न रहने के साथ-साथ ही इतना कुछ कर या करा सकते हैं कि उतने से भी बहुत कुछ बन पड़ना संभव हो सके। उच्च पदासीन, यशस्वी, धनी-मानी अपने प्रभाव का उपयोग करके भी समय की माँग पूरी करने में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा सकते हैं। विभूतिवानों का सहयोग भी अनेकबार कर्मवीर समयदानियों जितना ही प्रभावोत्पादक सिद्ध हो सकता है।

धन-साधन : नवसृजन के लिए साधनों की भी आवश्यकता रहेगी ही। भौतिक प्रयोजनों में तो अर्थ साधन ही प्रधान होते हैं, किन्तु युग प्रवाह को बदलने जैसे आध्यात्मिक अभियान के लिए भी अन्ततः साधन तो चाहिए ही। यों श्रम, समय, मनोयोग, भाव संवेदना जैसे तत्त्वों की ही युग परिवर्तन में प्रमुखता मानी जाएगी, फिर भी अर्थ साधनों के बिना उन्हें भी कार्यरूप में परिणित कर सकना संभव नहीं हो सकेगा। सामान्य निर्माण कार्यों के लिए साधन जुटाने पड़ते हैं, फिर इस महानतम कार्य के लिए साधनों के बिना ही काम चलता रहे, ऐसा संभव नहीं।

यह आवश्यकता भी जाग्रत् आत्माओं को ही पूरी करनी होगी। उत्तराधिकारियों के लिए जो अनावश्यक धन-सम्पदा छोड़ी जाती है, उस मोह ग्रस्तता पर अंकुश लगाने का तो हर दृष्टि से औचित्य है। निजी परिवार को ही सब कुछ मानते रहना और विश्व-परिवार के लिए कुछ भी न करना, यह ऐसा व्यामोह है, जो युग शिल्पियों के लिए अशोभनीय ही ठहरता है।

युग निर्माण परिवार के हर सदस्य को आरंभ से ही एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य (*आलेख लिखते समय परम पूज्य गुरुदेव ने आधा कप चाय की कीमत का उल्लेख किया था, जो वर्तमान समय में 5 से 10 रुपये तक हो सकती है*) ज्ञान यज्ञ के लिए देते रहने की प्रेरणा दी गई है। वह दिशा निर्धारण युग शिल्पियों के लिए आरम्भिक एवं अनिवार्य कर्त्तव्य बोध की तरह था। अब उसमें उदात्त अभिवृत्ति का समय आ गया है। समय और धन दोनों ही अनुदानों का स्तर तथा परिमाण बढ़ना चाहिए। जिसे अपने अन्तरंग में जितनी युग चेतना, हलचल मचाती दिखाई पड़े उन्हें उतने ही भाव-भरे अनुदान प्रस्तुत करने की तैयारी करनी चाहिए।

[वाङ्मय-28 (सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण, भाग-1) पृष्ठ 6.66 से संकलित, संपादित]

प.पू. गुरुदेव की आकांक्षा और पाक्षिक प्रज्ञा अभियान

परम पूज्य गुरुदेव के इसी आह्वान को ध्यान में रखते हुए कार्यकर्त्ताओं/परिजनों से कम से कम पाँच लोगों तक पहुँचने, पाक्षिक प्रज्ञा अभियान को जनसंपर्क का माध्यम बनाने और उन्हें गायत्री उपासना के लिए प्रेरित करते हुए युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के लिए सहमत करने का अनुरोध किया जा रहा है। पाँच लोगों से वर्ष में 24 बार संपर्क-संवाद होगा, उन्हें निःशुल्क प्रज्ञा अभियान (जिसके लिए हर पंद्रह दिन में 20 रुपये से भी कम का खर्च स्वयं वहन करना होगा) दिया जाये तो निश्चित ही परम पूज्य गुरुदेव की आकांक्षाओं के अनुरूप युग चेतना का दिव्य प्रकाश उन तक पहुँचेगा, उनके जीवन को आलोकित करेगा। इस गुरुदक्षिणा से हमारा शिष्यत्व सार्थक होगा।

गायत्री जयंती पर गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में
नवयुग की सृजन चेतना का दिव्य दर्शन

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी गायत्री जयंती पर्व पर पधारे श्रद्धालुओं को दीक्षा देते हुए

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में गायत्री जयंती, गंगा दशहरा, परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस एवं विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में 3 से 5 जून 2025 की तिथियों में अत्यंत भव्य एवं दिव्य समारोह आयोजित हुआ। देश-विदेश से लगभग बीस हजार से अधिक श्रद्धालु आए। उन्होंने विविध कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी गौरवशाली संस्कृति को हृदयंगम करते हुए महर्षि विश्वामित्र, वशिष्ठ, भगीरथ और परम पूज्य गुरुदेव के तपोमय जीवन का अनुसरण करने और श्रेय पथ अपनाकर महानता की ओर अग्रसर होने का संकल्प लिया।

5 जून को प्रातः श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने सैकड़ों साधकों को गायत्री महामंत्र की दीक्षा दिलाई, तत्पश्चात् उन्होंने अपने विशेष पर्व संदेश के साथ पर्व पूजन का क्रम सम्पन्न किया। दिन भर गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर भाव सुमन अर्पित करने वालों का सैलाब देखा गया। श्रद्धेय डॉ. साहब-जीजी ने सभी से व्यक्तिगत भेंट कर शुभकामना-आशीर्वाद दिये। (शेष समाचार पृष्ठ 8 पर)

बस एक ही विकल्प-युगशक्ति गायत्री

इस प्राणधारा को जनजीवन में प्रतिष्ठित करने से ही होगी सतयुग की वापसी

पूज्य गुरुदेव का कथन

अगले दिनों देवासुर संग्राम होने वाला है। उसमें मनुष्य और मनुष्य आपस में नहीं लड़ेंगे वरन आसुरी और दैवी प्रवृत्तियों में अपने-अपने अस्तित्व के लिए जम कर संघर्ष होगा। इस विचार संघर्ष में देवत्व के विजयी हो जाने पर वे परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी, जिनमें हर व्यक्ति को उचित न्याय, स्वातंत्र्य, उल्लास, साधन और संतोष मिल सके। आशा करनी चाहिए कि वह दिन हम लोग अपनी इन्हीं आँखों से, इसी जीवन में देखेंगे, जब अगणित देव प्रवृत्ति के व्यक्ति अपने-अपने स्वार्थों को तिलांजलि देकर विश्व के नवनिर्माण में ऐतिहासिक महापुरुषों की तरह प्रवृत्त होंगे और इन दिनों जिस पशुता और पैशाचिक प्रवृत्ति ने लोकमानस पर अपनी काली चादर बिछा रखी है, उसे तिरोहित करेंगे। अनाचार का अंत होगा और हर व्यक्ति अपने चारों ओर प्रेम, सौजन्य, सद्भाव, सहयोग, न्याय, उल्लास, सुविधा एवं सुख-शान्तिपूर्ण वातावरण अनुभव करेगा।

उस शुभ दिन को लाने का उत्तरदायित्व देव वर्ग का है। उसी को जगाना है, उसी को संगठित होना है, उसी को अविवेक के विरुद्ध संघर्ष में तत्पर होना है। वे जितने कम समय में अपना उत्तरदायित्व वहन करने को तत्पर हो सकें, उतना ही शीघ्र नवयुग का स्वर्णिम प्रभात उदय होते हुए हम देखेंगे और धन्य होंगे। (वाङ्मय 29, पृष्ठ 1.52)

बात आत्मगौरव की है, इस अनुभूति की है कि हम सबको महाकाल की ऐसी प्राणचेतना से जुड़ने का सौभाग्य मिला है, जो सारी दुनिया में आमूलचूल परिवर्तन का सरंजाम जुटा रही है। देव वर्ग की ऐसी अनगिनत देवात्माएँ पूरे विश्व में छायी हैं। परम पूज्य गुरुदेव उन्हीं को जगाने, झकझोरने और उनकी मूर्छना को दूर कर युगधर्म में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दे रहे हैं।

हमारे सनातन आदर्श

परम पूज्य गुरुदेव के भविष्य कथन के अनुरूप आज दुनिया में आमूलचूल परिवर्तन होता दिखाई दे रहा है। युगचेतना के प्रभाव से सारे विश्व में भारत और भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा निरंतर बढ़ रही है। यह सफलता शक्ति का प्रभाव नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति में निहित सार्वभौम जीवन मूल्यों की पूरे विश्व में स्वीकार्यता है। हमारे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दृष्टिकोण के कारण भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है। आज जब सारी दुनिया एक-दूसरे के खून की प्यासी है, अपने निहित स्वार्थों के लिए आतंकवाद को प्रोत्साहित कर रही है और साम्राज्यवाद की ओर बढ़ रही है, वहीं भारत विश्वबंधुत्व की बात कर रहा है। हम पीड़ितों और जरूरतमंदों के सहयोग के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं। भारत आधिपत्य स्थापित नहीं कर रहा, अपनी सनातन परंपरा के अनुसार विश्व का मार्गदर्शन कर रहा है, उनकी समस्याओं का समाधान कर रहा है।

दूसरी ओर भारत भौतिक प्रगति में भी पीछे नहीं है। हम अपनी श्रम सम्पदा और बुद्धि कौशल के आधार पर स्वावलम्बी और समर्थ बनते जा रहे हैं। लेकिन हमें अपने बढ़ते सुख-सुविधा के साधनों के उपभोग की वृत्ति छोड़कर उनके सदुपयोग की सोच विकसित करनी चाहिए। भौतिक दृष्टि से विकास सराहनीय है, लेकिन यदि वह हमें आलसी और प्रमादी बनाता है, कामुकता और फिजूलखर्ची को बढ़ावा देता है तो यह विकास अपनी सनातन संस्कृति के अनुरूप और लाभदायक नहीं है। भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच सही संतुलन स्थापित किया जा सके, तभी वह श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

सम्पादकीय

हमें अपनी संस्कृति के बुनियादी तत्त्वों को समझना होगा। सिकन्दर ने अपने गुरु के आदेश पर दण्डी स्वामी जी को अपने देश ले जाना चाहा था। इसके लिए उन्होंने ढेर सारे साधन-सुविधा देने का प्रस्ताव रखा, लेकिन दण्डी स्वामी ने विश्वविजयी सम्राट के प्रस्ताव को ठुकराते हुए अपनी छोटी-सी कुटिया में ही रहना पसंद किया। हमें तुलना करनी होगी कि सिकन्दर की विश्वविजय की अभीप्सा ज्यादा श्रेयस्कर है या दण्डी स्वामी का वह आत्मबल, जिसके कारण उन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए सिकन्दर का प्रस्ताव ठुकरा दिया। हमें देखना होगा कि औरंगजेब की तरह साम्राज्यवादी बनने में अधिक सुख है या अपनी धर्म-संस्कृति की रक्षा के लिए फतेहसिंह और जोरावरसिंह की तरह शहीद हो जाने में ज्यादा आनन्द है। रतन टाटा, अजीम प्रेमजी, वॉरेन बफेट जैसी महान हस्तियों से पूछा जाये कि धनवान बनना अधिक सुख देता है या दानवीर बनने में अधिक आनन्द और संतोष है?

आज का देवासुर संग्राम

आज दुनिया में भारत का वैभव और वर्चस्व बढ़ रहा है, लेकिन असुरता भी तो बढ़ती जा रही है। पहले नशे का साम्राज्य बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू, शराब तक सीमित था, आज ड्रग्स के रूप में न जाने कितनी तरह के और कैसे-कैसे तरीके अपनाए जा रहे हैं। यह नशाखोरी युवा पीढ़ी को खोखला करती जा रही है। घटते वन, बढ़ता प्लास्टिक का प्रचलन प्रकृति और पर्यावरण के लिए गंभीर समस्या बना हुआ है। अपराध जगत में नए-नए हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। घर-घर बीमारियाँ और कलह-क्लेश छाये हैं। फैशनपरस्ती, फिजूलखर्ची जैसी अनन्त समस्याएँ हैं, लेकिन उन सबका कारण एक ही है-मानवी मस्तिष्क में छाई दुर्बुद्धि।

विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान भी एक ही है, वह है सद्बुद्धि देने वाली, आत्मबल बढ़ाने वाली युगशक्ति गायत्री की जन-जन के जीवन में प्रतिष्ठा।

गुरुमंत्र गायत्री

'गायत्री' ब्रह्मचेतना है, ब्रह्मतेज है। जिस प्राण चेतना से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है, वह चेतना, वह ऊर्जा ही गायत्री है। चारों वेद गायत्री की ही व्याख्या हैं, इसलिए गायत्री 'वेदमाता' है। गायत्री उपासना मनुष्य में देवत्व जगाती है, इसलिए वह 'देवमाता' है। विश्व-ब्रह्माण्ड की पालक, पोषक, संतुलनकारी शक्ति गायत्री ही है, इसलिए वह 'विश्वमाता' है। **गायत्री उपासना का तात्पर्य आत्मचेतना की पृष्ठभूमि में ब्रह्मतेज का अवतरण है। पृथ्वी पर जिस तरह सूर्यकेंद्र से जीवन बरसता है, उसी प्रकार गायत्री उपासना से आत्मारूपी पृथ्वी पर ब्रह्मसत्ता के प्राणतेज की वर्षा होती है। इसी से अंतःभूमि पर विभूतियों की हरीतिमा उगती और फलती-फूलती है।**

गायत्री मंत्र गुरुमंत्र है। हमारी सनातन संस्कृति में दीक्षा देते समय यज्ञोपवीत धारण कराते हुए गायत्री मंत्र ही दिया जाता है। ऋषि, मुनि, अवतारी पुरुषों एवं महापुरुषों के जीवन में गायत्री उपासना अनिवार्य रूप से शामिल रही है। आज वंश और गुरु-शिष्य परम्परा के प्रचलन के कारण ऐसे सामर्थ्यवान गुरुओं का नितांत अभाव है, जो अपने शिष्य का सही मार्गदर्शन करते हुए उनके जीवन को ऊँचा उठा सकें। ऐसी स्थिति में गायत्री उपासना जीवन को प्रकाशित करने में समर्थ होती है। गायत्री मंत्र की उपासना से साधक का जीवन शनैः-शनैः सन्मार्ग की ओर प्रेरित होता जाता है।

गायत्री प्राण मंत्र है। अधिकांश लोग अच्छाई-बुराई को पहचानते तो हैं, किंतु बुराई का रास्ता छोड़कर अच्छाई के रास्ते को अपनाने का आत्मबल और साहस नहीं जुटा पाते। गायत्री उपासना ऐसे लोगों के जीवन में संजीवनी की तरह फलदायी होती है, उनमें साहस जगाती है।

प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव और उनके लाखों-करोड़ों शिष्य/अनुयायियों के तपोबल से आज पूरे विश्व में युगशक्ति गायत्री का एक सुरक्षा कवच स्थापित होता जा रहा है। आज आवश्यकता इस दिव्य कवच को धारण करने की है। जैसे विद्युत के तारों के माध्यम से जुड़ने वाले उपकरण प्रकाशित और ऊर्जावान हो जाते हैं, उसी प्रकार सूक्ष्म जगत में व्याप्त इस सुरक्षा कवच का लाभ प्रत्येक गायत्री उपासक को मिलता है।

जीवन में यदि अज्ञान, अभाव, अशक्ति से मुक्ति नहीं मिल पा रही हो तो विकल्प एक ही रह जाता है, युगशक्ति गायत्री का अवलम्बन। घर-परिवार में क्लेश-कलह से मुक्ति चाहते हैं, बच्चों को नशे के दुष्प्रभावों से बचाना चाहते हैं, अपने बच्चों को सद्गुणी, संस्कारवान बनाना चाहते हैं तो गायत्री उपासना कीजिए। 'सादा जीवन-उच्च विचार' के सूत्र को अपनाते हुए बीमारियों से मुक्ति चाहते हैं तो गायत्री उपासना कीजिए। युगशक्ति गायत्री ही है आज की हर समस्या का समाधान।

आत्मविकास के प्रबल प्रभावशाली सूत्र
युग निर्माण सत्संकल्प

4 इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत् अभ्यास करेंगे।

जीवनी शक्ति एक ही अनुदान की परिणति है-संयम। जो इसे अपनाता है, वह न रोगी होता है न दुखी। विशृंखलित, अस्त-व्यस्त विचार उसे प्रभावित नहीं कर पाते। जीवन देवता की उपासना तब ही भली प्रकार संभव है, जब अपने जीवन रसों को व्यर्थ बहाना छोड़कर मनुष्य उन्हें सृजनात्मक चिंतन व कर्त्तव्य में नियोजित करे। यदि व्यक्ति असंयम के दुष्परिणामों को समझ जाए, तो भूतल पर स्वर्ग आ जाए।

जीवन संपदा के चार क्षेत्र हैं-इंद्रिय शक्ति, समय शक्ति, विचार शक्ति तथा धन (साधन) शक्ति। जो व्यक्ति इन्हें दैवी विभूतियाँ मानकर इनका सुनियोजन करता है, वह अभाव से भरे संसार में रहते हुए भी साधन एकत्र कर लेता है।

इंद्रिय संयम : दस इंद्रियाँ हैं, जिनमें दो प्रमुख हैं, एक जिह्वा तथा दूसरी जननेंद्रिय है। जिह्वा संयम से शारीरिक स्वास्थ्य तथा जननेंद्रिय के संयम से मनोबल अक्षुण्ण रहता है। जिसने इनको वश में कर लिया, समझो उसने शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त कर लिया है।

समय संयम : समय ईश्वर प्रदत्त संपदा है। इसका सदुपयोग, सुनियोजन श्रम से ही किया जा सकता है। समय संयम में शिथिलता रहने से मनुष्य निश्चित रूप से आलसी और प्रमादी बनता है। हमारे सबसे समीपवर्ती शत्रु आलस्य और प्रमाद ही हैं। जो समय देवता की अवहेलना करते हैं, वे जीवन को निरर्थक बिता कर चलते बनते हैं। समय के असंयमी ही अल्पजीवी कहलाते हैं, भले ही उनकी आयु कितनी ही बड़ी क्यों न हो।

विचार संयम : उत्कृष्ट उपयोगी विचारों को मर्यादा में सीमाबद्ध रखने से वे सृजनात्मक प्रयोजनों में लगते हैं और महत्त्वपूर्ण प्रतिफल उत्पन्न करते हैं। जो जैसा सोचता है, वह वैसा ही करता है, इस उक्ति को सदैव स्मरण रखना चाहिए। विचारों को आवारा कुत्तों की तरह अचिंत्य चिंतन में भटकने न देने का नित्य अभ्यास करना चाहिए।

अर्थ संयम : परिश्रम एवं मनोयोग का प्रत्यक्ष फल धन है। पैसा चाहे अपना हो या पराया, उसे हर हालत में जीवनोपयोगी, समाजोपयोगी सामर्थ्य मानना चाहिए। जो कमाए हुए धन का सदाशयता में उपयोग नहीं करता या अनीतिपूर्वक धन उपार्जित करता है, वह घर में दुष्प्रवृत्तियों को आमंत्रित करता है। बुद्धिमानी इसी में है कि जितना भी कमाया जाए, उसका अनावश्यक संचय अथवा अपव्यय न हो। समुद्र संचय नहीं करता, मेघ बनकर बरस जाता है, तो बदले में नदियाँ दूना जल लेकर लौटाती हैं। दूसरी ओर आडंबरयुक्त विवाह, प्रदर्शन, फैशन परस्ती में अनावश्यक खर्च करने से उपार्जन का सही उपयोग नहीं होता। यहीं से सामाजिक अपराधों को बढ़ावा मिलता है। पारिवारिक कलह, मुकदमेबाजी आदि भी इन्हीं कारणों से उपजती है।

अपनी सामर्थ्य सृजन में लगाएँ : संयम का एक पक्ष जहाँ अनावश्यक अपव्यय को रोकना है, वहाँ दूसरी ओर उसे सृजनात्मक कार्यों हेतु नियोजित करना भी है। सामर्थ्य तभी श्रेयस्कर परिणाम उत्पन्न करती है, जब उसे अस्त-व्यस्तता एवं अनुपयुक्तता से बचाकर सृजनात्मक सत्प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किया जाए।

5 अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

जिस प्रकार एक शरीर से संबंधित सभी अवयवों का स्वार्थ और हित परस्पर संबद्ध है, उसी प्रकार सारी मानव जाति एक ही नाव में बैठी हुई है। एकता के आदर्शों से जुड़े हुए और उन आदर्शों के लिए सब कुछ निछावर कर देने की भावना वाले व्यक्तियों का समूह ही समाज या राष्ट्र है। यह शक्ति बनाए रखने के लिए सबके संयुक्त हित पर आस्था रखें।

हमें सुख और हित का अंतर समझना होगा। सुख केवल हमारी मान्यता और अभ्यास के अनुसार अनुभव होता है, जबकि हित शाश्वत सिद्धांतों से जुड़ा होता है। व्यक्तिगत स्वार्थ को सामूहिक हित के लिए उत्सर्ग कर देने का नाम ही पुण्य, परमार्थ है। इसी नीति को अपनाकर मनुष्य महापुरुष बनता है, लोकहित की भूमिका संपादन करता है और अपने देश, समाज का मुख उज्ज्वल करता है। मुक्ति और स्वर्ग का रास्ता भी यही है। हम सबको अपनी सद्गति एवं समाज की प्रगति के लिए व्यक्तिगत सुख-स्वार्थ की अंधी दौड़ बंद करके व्यापक हितों की साधना प्रारंभ करनी चाहिए।

मनुष्य का जीवन स्वार्थ के लिए नहीं, परमार्थ के लिए है। जो मिला है उसे बाँटकर खाना चाहिए। त्याग और उपकार की पुण्य प्रक्रिया का नाम ही धर्म, संस्कृति एवं मानवता है। यदि इस पुण्य प्रक्रिया को तोड़ दिया जाए, तो निश्चय ही मानवीय संस्कृति नष्ट हो जाएगी और ईश्वरीय आदेश के उल्लंघन के फलस्वरूप जो विकृति उत्पन्न होगी, उससे समस्त विश्व को भारी त्रास सहन करना पड़ेगा। इस मूर्खता को अपनाकर हम सर्वतोमुखी आपत्तियों को ही निमंत्रण देते हैं और उलझनों के दलदल में आज की तरह ही दिन-दिन गहरे धँसते चले जाते हैं।

सामाजिक न्याय का सिद्धांत ऐसा अकाट्य तथ्य है कि इसकी एक क्षण के लिए भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। एक वर्ग के साथ अन्याय होगा तो दूसरा वर्ग कभी भी शांतिपूर्वक जीवनयापन न कर सकेगा। सौ हाथों से कमाओ भले ही, पर उसे हजार हाथों से दान अवश्य कर दो, अर्थात् अगणित बुराइयों को जन्म देने वाली संग्रह-वृत्ति को पनपने न दो।

पर्यावरण जागरूकता अभियान

बच्चों ने निकाली वृक्ष काँवड़ रैली

अलवर। राजस्थान

विश्व पर्यावरण दिवस पर गायत्री शक्तिपीठ द्वारा अत्यंत आकर्षक रैली निकाली गई। शक्तिपीठ पर चल रहे बाल संस्कार शाला शिविर के 150 बच्चों ने अपने कंधों पर वृक्ष-काँवड़ धारण की और ''पर्यावरण की रक्षा कौन करेगा? हम करेंगे, हम करेंगे।'' के उद्घोष के साथ जन-जन तक अपना संदेश पहुँचाया।

पर्यावरण संरक्षण रैली के अंत में सभी बच्चों और बड़ों को जन्मदिन पर एक पौधा लगाने का संकल्प दिलाया गया। रैली का नेतृत्व डॉ. सरोज गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में अनेक वरिष्ठ परिजन उपस्थित रहे। आयोजन को सफल बनाने में ट्रस्ट की बहिनों एवं शिविर संयोजकों का विशेष योगदान रहा।

108 वट वृक्षों की पौध का निःशुल्क वितरण

भोपाल। मध्य प्रदेश

वट सावित्री व्रत (दर्श अमावस्या, दिनांक 26 मई 2025) में वटवृक्ष की पूजा का विधान है। इस पर्व की प्रेरणा के माध्यम से गायत्री परिवार के वृक्षगंगा अभियान को गति देते हुए गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में 108 वट वृक्षों का निःशुल्क वितरण किया गया। वटवृक्ष वितरण का यह पुनीत कार्य युवा प्रकोष्ठ भोपाल के मार्गदर्शन में श्रीमती एवं श्री राम प्रकाश गुप्ता जी के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। पूजन के पश्चात् सभी धर्मप्रेमी परिजनों ने बरगद के नन्हे पौधों को यथा स्थान आंगन, कॉलोनी, मंदिर अथवा सार्वजनिक स्थान पर रोपित करने के उपरांत उसके पालन पोषण का संकल्प लिया। शांति बरपेत जी, राकेश मिश्रा जी, व्यास जी एवं डी.के. सक्सेना जी का इस कार्य में सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

रेलवे स्टेशन परिसर में वृक्षारोपण

वलसाड। गुजरात

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वलसाड के रेलवे स्टेशन परिसर में स्थित पश्चिम रेलवे के लोको पायलेट एवं ट्रेन मैनेजर विश्राम गृह में गायत्री परिवार के सहयोग से वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में श्री एन.डी. दोहरे, सहायक मण्डल यांत्रिक अभियंता एवं क्षेत्रीय प्रबंधक वलसाड डॉ. मनोज बारहट, जिला शिक्षा अधिकारी, गायत्री परिवार के उपजोन प्रभारी श्री मितेशभाई पटेल, जिला युवा संयोजक श्री संजय भाई एवं नीरज कुमार जांगिड़ ने भाग लिया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित युवा प्रकोष्ठ ने मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

जहानाबाद। बिहार

विश्व पर्यावरण दिवस-5 जून 2025 को प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ, जहानाबाद द्वारा चलाए जा रहे साप्ताहिक रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान के चार वर्ष पूर्ण हुए। इस अवसर पर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स जहानाबाद में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि जिलाधिकारी श्रीमती अलंकृता पांडेय ने कहा कि वनों की अंधाधुंध कटाई से पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ रहा है, जिससे प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु परिवर्तन की समस्याएँ बढ़ रही हैं। उन्होंने गायत्री परिवार की पर्यावरण के प्रति समर्पित कार्यशैली की सराहना की एवं जिले को प्लास्टिक मुक्त बनाने की अपील भी की। अनुमंडल पदाधिकारी के साथ भी पौधारोपण किया गया।

कार्यक्रम में जिला प्रभारी रंगेश कुमार, मीडिया प्रभारी बचन देव कुमार, कोषाध्यक्ष कौशल कुमार, सहायक ट्रस्टी श्यामनारायण कुमार सहित अनेक परिजन एवं महिला मंडल की सक्रिय भागीदारी रही। अंत में जिलाधिकारी को पौधा भेंट कर सम्मानित किया गया।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर निकाली गई जागरूकता रैलियाँ

एक दर्जन लोगों ने लिया व्यसन छोड़ने का संकल्प

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

दिनांक 31 मई, 2025, विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर सायंकाल गायत्री शक्तिपीठ से व्यसन मुक्ति रैली निकाली गई, जो रतन बजरिया, बड़ा बाजार, तीन बत्ती तिगड्डा, अग्रवाल पेट्रोल पंप से होती हुई पुनः शक्तिपीठ पर समाप्त हुई। सभी परिजन अपने हाथों में नशा विरोधी स्लोगन्स की तख्तियाँ पकड़े हुए एवं प्रभावशाली नारे लगाते हुए नशा छोड़ने की अपील करते चल रहे थे। श्री ब्रज लाल पटेल एवं श्री एमपी बाथरे ने 'नशा न करना मान लो कहना' गीत के माध्यम से प्रेरणा दी एवं डॉ. सी.एल. नेमा ने बीड़ी, सिगरेट, गुटका, तंबाकू इत्यादि से होने वाले श्वास रोग, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों के संबंध में सभी को आगाह किया। रैली के प्रभाव से लगभग एक दर्जन लोगों ने व्यसनों को छोड़ने का संकल्प लिया।

इस नशामुक्ति जनजागरण अभियान में श्री रमेश श्रीवास्तव, श्री रामकिशोर दुबे, श्री जयप्रकाश नेमा, श्री सोमनाथ विश्वकर्मा, श्री अखिलेश पांडेय शिक्षक, श्री रघुवीर खटीक, श्री घनश्याम प्रजापति, श्री सुरेश कडेरे इत्यादि परिजनों का विशेष योगदान रहा।

हटा की सड़कों पर व्यसनमुक्ति का संदेश देते गायत्री परिवार के परिजन

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

दिनांक 31 मई 2025-अन्तर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस पर गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर द्वारा 'व्यसन मुक्त भारत अभियान' को गति देते हुए विशाल व्यसन मुक्ति रैली का आयोजन किया गया। रैली में बच्चों की एक टीम, बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू और शराब से होने वाली हानियों को एक नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रदर्शित करते हुए चल रही थी। उनके पीछे समस्त प्रज्ञा परिजन मिशन की वेशभूषा में व्यसनमुक्ति के नारे लगाते, प्रज्ञागीत गाते हुए क्षेत्र को बासंती आभा से आलोकित करते रहे।

सैकड़ों लोगों से व्यक्तिगत संपर्क कर नशामुक्ति की प्रेरणा दी गई। रैली की सफलता में श्री रणछोड़ राठौड़, श्री जगदीश राठौड़, श्री रतनलाल माली, श्री सत्येन्द्र चौहान, श्री जी.एल.भाटिया, श्री सुरेश टवली, श्री कमलेश राठौड़ श्री प्रदीप कनेश आदि भाइयों एवं महिला मण्डल की बहिन ज्योति राठौड़, बहिन कल्पना भाटिया, बहिन गीता राठौड़, बहिन गायत्री राठौड़, बहिन मीरा राठौड़, बहिन शारदा पटेल, बहिन अन्नपूर्णा राठौड़ आदि बहिनों का विशेष योगदान रहा।

हटा की सड़कों पर व्यसनमुक्ति का संदेश देते गायत्री परिवार के परिजन

अग्निकांड पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आया गायत्री परिवार

सेवा सद्भाव का अनुकरणीय आदर्श

मोहखेड़, छिंदवाड़ा। छत्तीसगढ़

मोहखेड़ तहसील के बीसापुर कलां में दिनांक 5 मई 2025 को अचानक आग लग गई। इसमें श्री अरुण जी एवं श्री अशोक बोरकर जी के घर पूरी तरह से जलकर खाक हो गए। अनाज, कपड़े, बर्तन, सोना, चांदी सब जलकर राख हो गए। शादी के लिए रखे तेल के टिनों ने आग को और भड़का दिया था।

गायत्री परिवार छिंदवाड़ा के जिला संगठन को जब यह समाचार मिला, तो पीड़ित परिवारों के प्रति सहज संवेदना जागी। ग्राम बीसापुर कलां के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री भावराव वानखेड़े, श्री अजाब राव वानखेड़े, गोकल श्री रतने जी एवं श्री राम विशाल पटेल जी के माध्यम से इसकी सूचना पास ही में कार्यक्रमों में सक्रिय, बीसापुर कलां के मूल निवासी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सूरत सिंह अमृते जी को मिली। वे भी अपने गाँव पहुँचे। उन्होंने छिंदवाड़ा के परिजनों के साथ अग्निकांड पीड़ित दोनों परिवारों के लिए जीवनावश्यक सामग्री एवं कुछ आर्थिक अनुदान एकत्रित किया। जिला समन्वयक श्री अशोक कावड़े एवं अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर उसे पीड़ितों तक पहुँचा दिया। उन्होंने यथा संभव सहयोग देने के आश्वासन के साथ पीड़ितों का मनोबल भी बढ़ाया।

अग्निकाण्ड पीड़ित परिवारों की सहायता करते गायत्री परिवार के परिजन

स्वास्थ्य लाभ के लिए किया विशेष गायत्री साधना अनुष्ठान

जबलपुर। मध्य प्रदेश

जलेबी घाट, नर्मदा तट पर गायत्री परिवार के मार्गदर्शन में विशेष 9 दिवसीय जल साधना शिविर का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत विशिष्ट गायत्री उपासकों ने प्रतिदिन प्रातः 6 से 8 बजे तक नर्मदा जी के जल में खड़े होकर गायत्री महामंत्र का जप किया। गायत्री परिवार की ओर से श्रीमती वंदना राजपूत ने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों का उल्लेख करते हुए बताया कि इस प्रकार के साधना अनुष्ठान गर्मी के मौसम में जल तत्व का संतुलन बनाए रखने की दृष्टि से उपयोगी होते हैं। उन्होंने बताया कि इससे आंतरिक ऊर्जा जाग्रत् होती है। यह मानसिक शांति एवं रोगमुक्ति में भी उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

10 दिवसीय निःशुल्क योग-प्राणायाम शिविर

भिलाई। छत्तीसगढ़

गायत्री प्रज्ञापीठ माता भगवती संस्थान रामनगर मुक्तिधाम के मार्गदर्शन में 24 मई से 1 जून तक सुपेला स्थित सुधीर एक्सरे हरा मैदान, काट्रैक्टर कॉलोनी में 10 दिवसीय निःशुल्क योग-प्राणायाम शिविर का सफल आयोजन किया गया। इसमें प्रतिभागियों को प्रतिदिन योग, प्राणायाम व ध्यान का अभ्यास कराया गया। शिविर का समापन 1 जून को यज्ञ एवं सम्मान समारोह के साथ हुआ, जिसमें पार्षद लालचंद वर्मा, पतंजलि सेवा समिति के प्रदेश प्रभारी अनूप बंसल, गायत्री परिवार के मोहन उमरे, श्याम विश्वकर्मा, पेखनलाल साहू सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

1000 लोगों ने भाग लिया

मोहन उमरे ने कहा कि योग-प्राणायाम शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करता है। स्थानीय नागरिकों ने इस आयोजन की सराहना करते हुए ऐसे शिविर नियमित कराने की माँग की। शिविर की व्यवस्थाओं में गायत्री परिवार के अनेक सेवाव्रती कार्यकर्त्ता सक्रिय रूप से सहभागी रहे।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9219040022 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

सुपर 100 की अवधारणा प्रस्तुत करती युवा उन्नयन कार्यशाला

छः जिलों के चयनित युवाओं ने भाग लिया नशामुक्त भारत निर्माण की शपथ दिलाई गई

भोपाल। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ एम.पी. नगर, भोपाल में 1 जून 2025 को युवा उन्नयन कार्यशाला का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। इसमें भोपाल उपजोन के अंतर्गत जिले भोपाल, हरदा, नर्मदापुरम, सीहोर, विदिशा और रायसेन के 240 से अधिक चयनित युवाओं ने सहभागिता की। इस सम्मेलन में जिला युवा समन्वयक डॉ. दयानंद समेले ने 'सुपर 100' टीम की अवधारणा प्रस्तुत की गई। उन्होंने कहा कि जो धैर्यवान, शक्तिवान, ज्ञानवान एवं साधक है, वही युग निर्माण के नेतृत्व के लिए उपयुक्त है।

कार्यशाला को संबोधित करते प्रमुख वक्ता

कार्यशाला का शुभारंभ प्रांतीय शक्तिपीठ समन्वयक श्री आर.के. गुप्ता एवं प्रशासक श्री विजय गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में दीप प्रज्वलन से हुआ। उपजोन समन्वयक श्री आर.पी. हजारी ने संगठन सशक्तीकरण पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि असुरता, अर्थात् बुरे कर्मों वाले लोग संगठित रहते हैं, इसलिए असरकारक होते हैं। इस असुरता पर विजय प्राप्त करनी है तो देवताओं को भी संगठित होना पड़ेगा। उन्होंने सभी युवाओं से मिशन के पंच महाअभियानों में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

शासकीय उ.मा. विद्यालय के प्रवक्ता श्री अजय शर्मा ने अध्यात्म को आंतरिक जीवन को आनंदित करने वाला विज्ञान बताया। युवा प्रकोष्ठ के ऊजार्वान कार्यकर्ता श्री अनमोल पाठक ने संस्था की 70 वर्षों की विकास यात्रा को रेखांकित करते हुए बताया कि गायत्री परिवार भारत सरकार के व्यसन मुक्ति अभियान में अधिकृत साझेदार भी है।

श्री सदानंद आंबेकर ने 'व्यक्तित्व परिष्कार और जीवन प्रबंधन' विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साधना का अर्थ है जीवन को तपाना, माँजना। यह सतत चलने वाली प्रक्रिया है, जो पात्रता का निर्माण करती है। इंजीनियर राहुल श्रीवास्तव ने 6 स्वर्णिम सूत्रों के माध्यम से आधुनिक युवाओं से जुड़ने की रणनीति बताई, जिसे उपस्थित युवाओं ने बहुत सराहा। डॉ. उर्वशी सोनी ने ChatGPT, AI और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के युग में मिशन को जन-जन तक पहुँचाने की विधियों को स्पष्ट किया।

ऑनलाइन एग्जिट टेस्ट, जिला प्रस्तुतियाँ एवं युवाओं की अनुभूतियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे।

समापन सत्र में प्रांतीय युवा समन्वयक श्री अमर धाकड़ ने युवाओं को युग निर्माण के लिए दो माह के भीतर अपनी प्रगति और सक्रियता की रिपोर्ट प्रस्तुत करने का संकल्प दिलाया। अंत में श्री रमेश नागर ने संगठन, व्यवस्थापक मंडल एवं उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए 'नशा मुक्त युवा भारत' निर्माण की शपथ दिलाई।

ज्योति कलश यात्राएँ

25 दिनों में 84 ग्रामों में पहुँची ज्योति कलश यात्रा

रीवा। मध्य प्रदेश

रीवा जिले में 1 मई से 25 मई तक चली 25 दिवसीय ज्योति कलश यात्रा का गूढ़ तहसील स्थित कष्टहर नाथ महादेव मंदिर में आयोजित दीपयज्ञ के साथ भव्य समापन हुआ। इस अवसर पर उपजोन समन्वयक श्री प्रभाकांत तिवारी, सह-समन्वयक एस.पी. मिश्रा, सिंगरौली जिला समन्वयक श्री रामभजन वैश्य, रीवा जिला समन्वयक श्री रविन्द्र सिंह सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

श्री प्रभाकांत तिवारी ने बताया कि ज्योति कलश रथ यात्रा ने 25 दिनों में जिले की 9 तहसीलों, 84 ग्रामों के 3,523 लोगों तक गुरुदेव का संदेश पहुँचाया। साथ ही 25 गायत्री महायज्ञ, 27 दीपयज्ञ, 84 कलश पूजन दर्शन, 100 गायत्री चालीसा पाठ, 100 मंत्र लेखन, 2100 वृक्षारोपण संकल्प के साथ-साथ प्रज्ञा मंडल व प्रज्ञा अभियान की अनेक गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं।

समापन कार्यक्रम में अगामी दिनों स्वावलंबन आंदोलन के अंतर्गत किसानों के लिए प्रशिक्षण का संकल्प भी लिया गया।

20 पंचायतों में आयोजित हुए भव्य स्वागत समारोह

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की अलौकिक चेतना को धारण किए दिव्य ज्योति कलश हटा जिले की 20 पंचायतों - तेवरैया, हिनौता, देवरा, मुहरई, दादपुर, खैरा, खमरगौर, दिगी, मडियादो, सकोर, हटा, हिनौती उदेशा ,पैरवारा, मानपुरा, कुलुवा, रसीलपुर, बरखेड़ा बेस, बिला कला, राजाबंदी एवं पटेरा के पुण्यात्मा परिजनों पर अनुग्रह बरसाने पहुँचा। जहाँ-जहाँ से भी दिव्य ज्योति कलश रथ हो कर गुजरा, स्थानीय परिजनों ने उसका दर्शन-पूजन, आरती एवं पुष्पवर्षा कर अपने सौभाग्य की सराहना की।

प्रतिदिन प्रातःकाल गायत्री यज्ञ एवं सायंकाल दीपयज्ञ, प्रज्ञा गीत, गुरुवर के संदेश इत्यादि के क्रम स्थानीय परिजनों में विशेष उल्लास का संचार करते रहे।

ज्योति कलश यात्रा श्री रजनीश चौरसिया, श्री संदीप विश्वकर्मा, सारथी श्री विक्रांत सिंह भदोरिया एवं श्री देवेंद्र चौरसिया के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। इसके सफल संचालन में सर्वश्री रामस्वरूप दुबे, लीलाधर पटेल, गिरधर पटैरया, दिनेश दुबे, हरिनारायण चौकरया, सुरेंद्र खरे, कर्णसिंह राजपूत, दिवाकांत श्रीवास्तव, पं मदन गोपाल दुबे, रामकिशोर दुबे, देवशंकर दीक्षित, कोमल सिंह, रज्जू सिंह इत्यादि का विशेष सहयोग रहा।

फलता-फूलता गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान

शक्तिपीठ के स्थापना दिवस पर 56 घरों में गायत्री यज्ञ हुए

पेटलावद, झाबुआ। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ पेटलावद के स्थापना दिवस पर नगर में आध्यात्मिक ऊर्जा का अभूतपूर्व संचार हुआ। इस उपलक्ष्य में 'गृहे-गृहे यज्ञ अभियान' के अंतर्गत नगर के 56 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराए गए। सभी यजमानों ने 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' के उद्घोष को अपनाते हुए देवदक्षिणा स्वरूप बुराइयाँ त्यागने के संकल्प लिए। इन यज्ञों को संपन्न कराने हेतु रतलाम, दाहोद, लिमड़ी, सैलाना, थांदला, झाबुआ, मेघनगर, जोबट, नागदा एवं बिड़वाल सहित विभिन्न स्थानों से यज्ञाचार्यों को आमंत्रित किया गया था। कई घरों में गृह प्रवेश, जन्मदिन एवं संस्कार भी यज्ञ के साथ आयोजित किए गए।

पेटलावद में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ

शक्तिपीठ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में शक्तिपीठ में पंच कुंडीय यज्ञ का आयोजन भी किया गयो, जिससे सम्पूर्ण वातावरण श्रद्धा, प्रेरणा और दिव्यता से ओतप्रोत हो गया।

51 घरों में यज्ञ हुए

जावरा, रतलाम। मध्य प्रदेश

जावरा शाखा द्वारा चलाए जा रहे साप्ताहिक 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान' के अंतर्गत दिनांक 1 जून 2025, रविवार को ग्राम गुर्जर बरडिया में एक साथ 51 घरों में गायत्री यज्ञ संपन्न हुए। यज्ञ में सम्मिलित सभी परिजनों से एक बुराई छोड़ने, एक अच्छाई ग्रहण करने एवं नियमित गायत्री मंत्र जप करने का संकल्प करवाया गया।

जावरा शाखा द्वारा यह अभियान अखंड दीप एवं वंदनीया माता जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत प्रत्येक रविवार को जिले के एक नए क्षेत्र में अनेक घरों में एक साथ यज्ञ सम्पन्न कराते हुए पूज्यवर के विचारों और उनकी प्राण चेतना को घर-घर पहुँचाया जा रहा है।

युवा चेतना शिविर में प्रतिभाओं का सम्मान

रीवा। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ रीवा की गंगोत्री वाटिका में दिनांक 25 मई, 2025 को युवा चेतना शिविर के साथ प्रतिभा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में राज्य स्तर की प्रवीणता सूची में स्थान प्राप्त रीवा के दो विद्यार्थियों को ₹1100/- के नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। वर्ष 2024-25 में हाई स्कूल और सेकेण्डरी की परीक्षा में 80% से अधिक अंक लाने वाले छात्रों को भी पूज्यवर द्वारा लिखित जीवनोपयोगी पुस्तकें भेंट कर सम्मानित किया।

गा. शक्तिपीठ रीवा में प्रतिभाओं को सम्मानित करते वरिष्ठ प्रज्ञा परिजन

शिविर का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं स्वागत गीत से हुआ। तत्पश्चात् श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल एवं श्री राकेश प्रभाकर पांडेय ने छात्रों को मानव जीवन की सफलता में गायत्री महामंत्र के दिव्य प्रभाव के विषय में मार्गदर्शन दिया। युवा प्रकोष्ठ के संयोजक श्री राजेश शर्मा ने साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा के अभ्यास से व्यक्तित्व पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों के विषय में जानकारी दी। श्री प्रमोद सिंह एवं श्री विनोद पांडेय ने प्रतिदिन 15 मिनट गायत्री मंत्र जप एवं लेखन के लिए प्रेरित किया।

गायत्री परिजनों के अतिरिक्त समारोह में कई समाजसेवी संगठनों, शिक्षाविदों, विद्यालय संचालकों, प्राचार्यों एवं शिक्षकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री राकेश प्रभाकर पांडेय, ट्रस्टी बहिन आभा सिंह, बहिन पुष्पा सिंह, श्री एस. पी. निगम, श्री राजकुमार नामदेव, श्री अभिमन्यु सिंह, तहसील समन्वयक श्री ऋषिकेश तिवारी, डॉ. राजेश मिश्रा, श्री कौशलेन्द्र पांडेय का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

'उत्कर्ष' में 70 बच्चों ने सीखे जीवन निर्माण के सूत्र

उदयपुर। राजस्थान : दिव्य भारत युवा संघ 'दिया' उदयपुर द्वारा गायत्री शक्तिपीठ उदयपुर पर 21 से 25 मई तक पाँच दिवसीय आवासीय ग्रीष्मकालीन शिविर 'उत्कर्ष' का आयोजन किया गया। इसमें 12 से 18 वर्ष आयु वर्ग के 70 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

शिविर में बच्चों को योग, प्राणायाम, यज्ञ, श्रमदान, जीवन मूल्य, आत्म-विकास, दिनचर्या निर्माण, पर्सनेलिटी डेवलपमेंट, करियर गाइडेंस, नशा मुक्ति एवं परिवार में संवाद जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन दिया। श्रीमद्भगवद्गीता और रामायण के श्लोकों पर चर्चा और सनातन संस्कृति की मूल अवधारणाओं पर विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया।

विशेषज्ञ संस्थानों की सेवाएँ

शिविर के दौरान एस्ट्रोब संस्था द्वारा अंतरिक्ष विषय पर कार्यशाला, WWF द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता, यंग गैजेट्स द्वारा पब्लिक स्पीकिंग, व सीडबॉल्स एवं पॉट मेकिंग की गतिविधियाँ आयोजित की गईं। अंतिम दिन HEARD पेरेंटिंग वर्कशॉप में अभिभावकों को युवा पीढ़ी से संवाद और रिश्तों की मजबूती पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। शिविर समन्वयक हेमांग जोशी व उनकी टीम के संयोजन में आयोजित इस शिविर की सफलता को सभी ने सराहा।

9वाँ वार्षिक युवा सम्मेलन

'दिया' उदयपुर द्वारा हर वर्ष ग्रीष्मकाल में युवा सम्मेलन 'उत्कर्ष' का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष लगातार 9वें वर्ष यह कार्यक्रम आयोजित हुआ।

हमें ईश्वर का सच्चा साक्षात्कार तभी होता है, जब हम उनके सामने अपनी याचनाएँ लेकर नहीं, किन्तु अपनी भेंट लेकर जाते हैं। - रवीन्द्रनाथ टैगोर

मध्य प्रदेश के गायत्री जयंती समारोहों में युग निर्माणी आस्थाओं का पोषण

देवास जिले की अनेक शाखाओं द्वारा जन्मशताब्दी वर्ष के उत्साह के साथ मनाई गई गायत्री जयंती

देवास में गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित गायत्री जयंती पर्व मनाते नैष्ठिक परिजन

देवास । मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर एवं गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर में दिनांक 5 जून, 2025 को गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुए। गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर की संरक्षिका दुर्गा दीदी के निर्देशन में पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ पर्व पूजन का मुख्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, विभिन्न संस्कार भी सम्पन्न हुए। इस अवसर पर ऋषियुग्म के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' को फूलों से अत्यंत आकर्षक तरीके सुसज्जित किया गया।

दोपहर 12 बजे कार्यकर्त्ता गोष्ठी में युवा प्रकोष्ठ के जिला समन्वयक प्रमोद निहाले ने पर्व के मूल उद्देश्य से सभी को अवगत कराया एवं जन्म शताब्दी वर्ष के संकल्पों को दोहराते हुए बताया कि सभी परिजनों को समयदान एवं अंशदान के साथ समाज निर्माण में अपनी सार्थक भूमिका की ओर अग्रसर होना होगा। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी की प्रभारी बहिन सरिता पाटीदार ने भी सभी को सम्बोधित किया। इससे पूर्व दिनांक 4 जून को 12 घण्टे का अखण्ड जप रखा गया था, जिसका समापन दीप यज्ञ एवं आरती के साथ हुआ।

दैनिक कर्मकाण्ड प्रशिक्षण आरंभ

कन्नौद, देवास। मध्य प्रदेश

दिनांक 5 जून, गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस के पवित्र अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ कन्नौद में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शक्तिपीठ पर प्रतिदिन कर्मकाण्ड प्रशिक्षण आरंभ करने की घोषणा की भी की गई।

इससे पूर्व दिनांक 4 जून को प्रातः 8:00 से सायं 5:00 बजे तक अखंड जप सम्पन्न हुआ, जिसका समापन सायंकाल दीप यज्ञ के साथ हुआ।

वार्षिकोत्सव मनाया, सृजनात्मक सक्रियता के संकल्प लिये

हाटपीपल्या, देवास। मध्य प्रदेश

ग्राम पोलाय में हर वर्ष गायत्री जयंती के अवसर पर तीन दिवसीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष यह कार्यक्रम दिनांक 6 से 8 जून की तिथियों में सम्पन्न हुआ। 8 जून को यज्ञ की पूर्णाहुति में ग्राम पोलाय निवासियों ने नियमित साधना-उपासना के साथ -साथ गाँव को व्यसन मुक्त बनाने, वृक्षारोपण करने तथा कुरीतियों एवं अंधविश्वासों के त्याग के संकल्प लिए। कार्यक्रम में हाटपीपल्या एवं पोलाय क्षेत्र के परिजन बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का पुरस्कार वितरण समारोह

सोनकच्छ, देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री जयंती के पावन अवसर पर सोनकच्छ में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें कक्षा 5वीं से 12वीं तक, तहसील व जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बालक-बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया। संरक्षक सौभागसिंह ठाकुर जी ने अपनी ओर से भी बच्चों को नगद राशि प्रदान की।

समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी व पूर्व रोटरी गवर्नर श्री सत्यनारायण लाठी ने कहा कि हमारी संस्कृति और विरासत को बचाये रखने तथा युवा पीढ़ी की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा एवं गायत्री परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस समारोह में सुप्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डॉ. अलेक्स जोसेफ विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्री सी.एल. पैठारी जी ने की। समस्त गणमान्यों का स्वागत गायत्री मंत्र का उत्तरीय एवं मिशन का साहित्य प्रदान कर किया गया। तहसील समन्वयक श्री सतीश चन्द्र तिवारी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के तहसील संयोजक श्री शिवनारायण शर्मा, प्रबंधक ट्रस्टी श्री रमेश चंद्र मेहता, संरक्षक सोभाग सिंह ठाकुर, श्रीमती जानकी शर्मा, श्री रविंद्र नायक इत्यादि परिजनों की विशेष उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

पर्व आयोजन एवं वृक्षारोपण

इससे पूर्व सोनकच्छ में प्रातःकाल गायत्री जयंती पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में अतिथियों के माध्यम से मंदिर परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

सोनकच्छ में भा.सं. ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण

शक्तिपीठ में शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा हुई

700 परिजनों ने यज्ञाहुतियाँ दीं

ग्वालियर। मध्य प्रदेश :

गायत्री जयंती पर्व पर गायत्री शक्तिपीठ तानसेन नगर में पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस अवसर पर गायत्री परिवार के सदस्यों को उनके विशिष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। श्री बी.के. गुप्ता ने नवयुग के संविधान के सामूहिक वाचन का कार्यक्रम विशेष प्रेरणादायी आयोजन था।

गायत्री चेतना केंद्र पिंटू पार्क पर गायत्री जयंती एवं गंगा दशहरा पर्व पर 12 घंटे का सामूहिक अखंड जप एवं पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ आयोजित हुआ, जिसमें 700 लोगों ने आत्मकल्याण और लोकमंगल की कामना के साथ आहुतियाँ समर्पित कीं। श्री संजय शर्मा एवं लाल बहादुर सिंह ने बताया कि परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस पर उनके युग निर्माणी संकल्पों के प्रति अगाध निष्ठा व्यक्त करते हुए ऋषियुग्म के स्मारक प्रखर प्रज्ञा सजल श्रद्धा पर परिजनों ने अपनी भावांजलि अर्पित की। 90 परिजनों को मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ वितरित कर मंत्र लेखन का संकल्प दिलाया गया।

शक्तिपीठ तानसेन नगर में गायत्री जयंती पर्व मनाते परिजन

नई उमंग, नई पहल, नए संकल्प

जन्मभूमि आँवलखेड़ा में गौमाता एवं गोवर्धन की स्थापना

गायत्रीमय हो गई जन्मभूमि

आँवलखेड़ा। उत्तर प्रदेश

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्मस्थली, पावन युगतीर्थ आँवलखेड़ा गायत्री जयंती एवं गंगा दशहरा पर्व पर गायत्रीमय हो उठी। वहाँ मनाए गए दो दिवसीय विशेष आयोजन में आसपास के कई गाँवों से आए हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। गायत्री शक्तिपीठ आँवलखेड़ा में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में अखण्ड जप, गायत्री यज्ञ, विभिन्न संस्कार आदि सम्पन्न हुए। 20 नए परिजनों ने दीक्षा ली। सारे विश्व को नवप्राण चेतना से भर देने वाले आँवलखेड़ा के लाल का महाप्रयाण दिवस होने के कारण सभी में विशेष गौरव की अनुभूति हुई।

गायत्री शक्तिपीठ में स्थित माता भगवती गौशाला में गोवर्धन एवं ब्रह्म कमल स्थित गौमाता की आकर्षक मूर्तियों का भव्य अनावरण भी हुआ, जो श्रद्धालुओं के विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं।

गौशाला परिसर में नौ कुण्डीय यज्ञ

पूरनपुर, पीलीभीत। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ, गन्ना समिति पूरनपुर व माता भगवती देवी गौशाला, प्रसादपुर में गायत्री जयंती, गंगा दशहरा एवं परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का महाप्रयाण दिवस बड़े श्रद्धाभाव के साथ मनाया गया। गौशाला प्रसादपुर में आयोजित नौ कुंडीय महायज्ञ में बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा की स्थापना हेतु अंशदान भी किया गया।

यज्ञ संचालन पं. लालता प्रसाद शास्त्री की टोली द्वारा किया गया। श्री राम औतार कुशवाहा ने नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं को अधिक से अधिक साधना करने व नए साधक तैयार करने का संकल्प दिलाया। श्री अनंतराम पालिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में हर कार्यकर्त्ता जोड़े नए 11 परिवार

जमशेदपुर। झारखण्ड

गायत्री ज्ञान मंदिर, भालूबासा में गायत्री जयंती के पावन अवसर पर पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर सभी कार्यकर्त्ताओं को अगला वर्ष परम वंदनीया माता जी की जन्म शताब्दी एवं अखंड दीप प्रज्वलन की शताब्दी के रूप में मनाये जाने हेतु और उससे जुड़े दायित्वों का स्मरण कराया गया। सभी से इस निमित्त युग चेतना का व्यापक विस्तार करते हुए प्रत्येक परिजन को कम से कम 11 नए परिवारों को मिशन से जोड़ने का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम के अंत में उपस्थित परिजनों ने पूज्य गुरुदेव के चरणों में पुष्पांजलि अर्पित कर युग निर्माण अभियान को गति देने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में नवयुग दल एवं प्रज्ञा महिला मंडल के कार्यकर्त्ताओं की सक्रिय भागीदारी सराहनीय रही।

पौध वितरण एवं वृक्षारोपण की प्रेरणा

देवघर। झारखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ डाबरग्राम, देवघर में गायत्री जयंती पर्व पंच कुण्डीय महायज्ञ के साथ मनाया गया। श्री बुधन वर्मा ने इस अवसर पर जीवन को पवित्र करने वाली दिव्य शक्ति गायत्री और गंगा की महत्ता बताई। श्रद्धालुओं को निःशुल्क पौधा भेंट कर जन्मदिन, विवाह दिन आदि पर वृक्षारोपण का संकल्प दिलाया गया। यज्ञ में सैकड़ों साधकों ने भाग लिया। विवाह सहित कई संस्कार निःशुल्क करवाये गए।

इससे पूर्व 4 जून को 12 घंटे का अखंड जप व दीपयज्ञ भी हुआ। आयोजन में वरुण कुमार, देवनारायण रजक, उमाकान्त राय, आशुतोष सिंह सहित अनेक साधकों का योगदान रहा।

भावभरी श्रद्धांजलि

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

युग निर्माण आंदोलन के समर्पित सेवानिवृत्त शिक्षक श्री धनीराम दहायत जी का दिनांक 28 मई 2025 को 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे वर्ष 1988 से गायत्री परिवार से जुड़े रहे और जीवन पर्यन्त अगाध निष्ठा, अनुशासन और समर्पण के भाव से मिशन की गतिविधियों में सक्रिय रहे। उन्होंने गायत्री प्रज्ञापीठ, तेवरैया के माध्यम से 100 से अधिक घरों में अखंड ज्योति पत्रिका का वितरण कर ज्ञानयज्ञ के विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे जीवन के अंतिम समय तक गुरुकृत्यों में संलग्न रहे।

तुलसी वितरण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

जबलपुर। मध्य प्रदेश : माँ गायत्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ, मनमोहन नगर में 12 घंटे का सामूहिक गायत्री मंत्र जप, पंच कुंडीय गायत्री यज्ञ तथा सायंकाल दीप महायज्ञ का भव्य दो दिवसीय आयोजन हुआ। इसके साथ ही विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ द्वारा 108 तुलसी की पौधों का वितरण करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया।

संस्कारधानी जबलपुर के परिजनों द्वारा विभिन्न संस्कार भी संपन्न कराए गए। व्यवस्थापक श्री प्रमोद राय ने गायत्री महामंत्र की महत्ता समझायी। उन्होंने कहा कि माँ गायत्री और यज्ञ भारतीय संस्कृति की आधारशिला हैं। नियमित गायत्री मंत्र जप से जीवन में सकारात्मक और आश्चर्यजनक परिवर्तन आते हैं।

सायंकाल वॉइस ऑफ प्रज्ञा टीम द्वारा प्रज्ञा गीतों की सुमधुर प्रस्तुति दी गई, जिसने उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया। गायत्री परिवार द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम श्रद्धा, भक्ति एवं सामाजिक चेतना का सुंदर संगम रहा, जिसमें सभी वर्गों ने सक्रिय सहभागिता निभाई।

जिसे मन में ईश्वर से प्रेम हो गया, उसे संसार का सुख अच्छा नहीं लगता। जो एक बार मिश्री का स्वाद ले चुका है, वह क्या राख खाना चाहेगा? - स्वामी रामकृष्ण परमहंस

ज्योति कलश के संग अफ्रीकी देशों के प्रवास पर पहुँची शान्तिकुञ्ज की टोली

तंजानिया, केन्या, युगांडा में 24 से लेकर 51 कुण्डीय यज्ञ और भजनोपदेश परक विशाल कार्यक्रम हुए

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज द्वारा जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के पूर्व परम पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म और कारण सत्ता के दृश्यमान स्वरूप 'अखण्ड ज्योति' का प्रेरणा प्रकाश और शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माताजी की भाव संवेदनाओं को ज्योति कलश यात्राओं के माध्यम देश-विदेश में पहुँचाया जा रहा है। शान्तिकुञ्ज से श्री शांतिलाल पटेल, श्री छबिराम गढ़िया एवं श्री नारायण रघुवंशी की टोली ज्योति कलश को लेकर अफ्रीकी देश तंजानिया, केन्या, यूगांडा में पहुँची। 28 फरवरी से 8 अप्रैल 2025 तक के उनके प्रवास में तीनों देशों के बड़े-बड़े नगरों में 24 और 51 कुण्डीय यज्ञ से लेकर कई विविधतापूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण के इन प्रयासों से हजारों लोगों को मानवता के उत्थान के लिए युगधर्म निभाने की प्रेरणा मिली।

कम्पाला, यूगांडा में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का संचालन कराती शान्तिकुञ्ज की टोली

कम्पाला के एक विद्यालय परिसर में आयोजित हुए कार्यक्रम में भाग लेते बच्चे

नैरोबी में आयोजित 51 कुण्डीय यज्ञ में भाग लेते परिजन

तंजानिया : यात्रा की शुरूआत तंजानिया की राजधानी **दार-ए-सलाम** से हुई, जहाँ आईटीसीसी शिशुकुंज में दीपयज्ञ, प्रवचन व 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सहित विभिन्न कार्यक्रम हुए। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने इनमें भाग लिया। इसके बाद **म्वांजा** स्थित गायत्री प्रज्ञापीठ में 9 कुण्डीय महायज्ञ एवं दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। **अरूशा** स्थित सनातन हिंदू टेम्पल व **मोशी** के गरबी चौक मंदिर में भी दीपयज्ञ एवं 24 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुए।

केन्या : केन्या की राजधानी नैरोबी में प्रेरणाप्रद दृष्टांतों के साथ दीपयज्ञ ने सैकड़ों श्रद्धालुओं में आस्था के दीप जलाए। अपनी संस्कृति के विधि-विधान से होलिका दहन हुआ। नैरोबी के प्रीमियर क्लब में 51 कुण्डीय विराट गायत्री महायज्ञ तथा एसएसडीएम टेम्पल, थीका, किसुमु, किटाले सहित कई स्थानों पर यज्ञ, दीपयज्ञ व देवस्थापनाएँ हुईं। महेन्द्र खेतिया जी के परिवार की अखण्ड यज्ञशाला में विश्वशांति हेतु विशेष आहुतियाँ समर्पित की गईं।

किटाले में 24 कुण्डीय यज्ञ में युवाओं की उल्लेखनीय सहभागिता रही। सभी को गायत्री साधना व युग साहित्य से जुड़ने हेतु प्रेरित किया गया।

युगांडा : राजधानी कम्पाला में रूपारेलिया हॉल में भव्य दीपयज्ञ आयोजित हुआ, जिसमें 275 से अधिक श्रद्धालु उपस्थित रहे। लोहाना हाई स्कूल में सम्पन्न 51 कुण्डीय यज्ञ के पश्चात् हुई वर्षा को प्रतिभागियों ने देव शक्तियों की उपस्थिति का संकेत माना।

एन्टेबी, जिंजा सहित अन्य शहरों में भी दीपयज्ञ, 51 कुण्डीय यज्ञ और रामनवमी उत्सव हर्षोल्लास से मनाए गए। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से उल्लसित युवाओं की भागीदारी ने सभी को उत्साहित किया। भजनोपदेशक कार्यक्रमों और युग साहित्य वितरण से पूरे अफ्रीका में भारतीय संस्कृति की दिव्य गूंज सुनाई दी।

इस संपूर्ण अभियान में श्री किशोर ठकराल, सरला बेन, श्री मनीष ठकराल, नीलेश पटेल, पीयूष जानी, परेश मेहता, प्रेमल भाई, शैलेश भाई, कार्तिक भाई, प्रिया बेन, नितिन भाई, निमेश भाई मोरी, दिपेन भाई, विनय भाई, मनीष भाई, सफल भाई व ज्योति बेन का विशेष सहयोग रहा।

अमेरिका, कनाडा और मलेशिया में मनी गायत्री जयंती

गायत्री जयंती के पावन अवसर पर अमेरिका और कनाडा में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि टोली द्वारा पाँच भव्य कार्यक्रमों की श्रृंखला के माध्यम से पूरे सप्ताह यह पर्व श्रद्धा, उत्साह और सांस्कृतिक गरिमा के साथ मनाया गया।

शिकागो के गायत्री ज्ञान मंदिर में 1 जून, रविवार को 24 कुण्डीय महायज्ञ के साथ कार्यक्रम का भव्य शुभारंभ हुआ, जिसमें लगभग 600 श्रद्धालु परिजनों ने भाग लिया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. प्रमोद भटनागर, रमेश तिवारी, सोमेश्वर तांडी की टोली ने गायत्री के ज्ञान-विज्ञान पर विस्तार से प्रकाश डाला। दो परिजनों ने दीक्षा ली।

गायत्री जयंती के दिन गायत्री ज्ञान मंदिर में भव्य आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 200 नये परिजनों ने भाग लिया। गायत्री जयंती के कार्यक्रम का ऑनलाइन संस्करण शीला बेन पटेल के संयोजन में सम्पन्न हुआ। इस सत्र में भी सैकड़ों श्रद्धालु परिजनों की सहभागिता रही।

मांट्रियल (कनाडा)

मांट्रियल (कनाडा) में 8 जून को हिंदू मंदिर में गायत्री जयंती पर्व मनाया गया। इसमें 500 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। त्रिपदा गायत्री के स्वरूप, उपासना विधि, साधना के लाभ एवं भारतीय वेदों के वैज्ञानिक पक्षों पर विशेष चर्चा हुई। भारतीय संस्कृति की महानता एवं जीवन में उसकी उपयोगिता को हृदयस्पर्शी रूप में प्रस्तुत किया गया।

विनिपेग (कनाडा)

उसी दिन सायंकाल विनिपेग से हिमांशु भाई के माध्यम से आयोजित ऑनलाइन सत्र में सैकड़ों श्रद्धालु परिजनों ने गायत्री की शक्ति एवं वैज्ञानिक आधार पर विस्तार से मार्गदर्शन प्राप्त किया। यह कार्यक्रम कनाडा और अमेरिका के अनेक शहरों में ऑनलाइन देखा और सुना गया।

शिकागो में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री जयंती पर्व का संचालन करती शान्तिकुञ्ज की टोली

ऑनलाइन दीपयज्ञ के साथ मातृसत्ता को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

इर्विंग, टेक्सास। यू.एस.ए.

युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित कतिपय प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने गायत्री जयंती के उपलक्ष्य में ऑनलाइन दीपयज्ञ का आयोजन कर पावन गुरुसत्ता को अपनी भावभरी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। दीपयज्ञ के सूत्र संचालक श्री वैभव पानेरी ने बताया कि 6 जून की रात्रि 8 बजे आयोजित यह कार्यक्रम **'एक दीप से अनेक दीप जले'** के भाव से किया गया एक प्रेरक उदाहरण था।

कार्यक्रम की शुरूआत श्रद्धेया शैल दीदी के संदेश से हुई, जिसमें उन्होंने अखंड दीप की ऊर्जा और युग निर्माण सत्संकल्प की प्रेरणाओं को जीवंत करने का आह्वान किया था। इसके बाद सुश्री सावित्री जायसवाल ने भावविभोर कर देने वाला भजन प्रस्तुत किया।

दीपयज्ञ में शामिल सभी लोगों ने मिलकर गायत्रीस्वरूप जीवन जीकर, गायत्री की महत् चेतना में ही विलीन हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के अनुदानों का स्मरण किया एवं उनके द्वारा बताये कार्यों को पूरा करने का संकल्प लिया।

तमिल साधकों की आस्था बढ़ी

कुआलालंपुर। मलेशिया

गायत्री परिवार मलेशिया द्वारा गायत्री जयंती के पावन अवसर पर कुआलालंपुर स्थित देवी शक्ति अम्मन मंदिर में एक दिव्य दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। इसके आयोजन में तमिल समुदाय का विशेष सहयोग रहा। उल्लेखनीय है कि दीपयज्ञ में शामिल सभी परिजन पहले से ही गायत्री उपासक थे, किंतु जब उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज के बारे में जाना, तो उनकी श्रद्धा और बढ़ गई। उनमें महाकाल के साथ साझेदारी की भावना जागी।

सभी को निःशुल्क युग साहित्य भेंट किया गया।

केजीएमयू के पैरामेडिकल संकाय में वाङ्मय स्थापना

केजीएमयू को वाङ्मय सेट भेंट करते गायत्री परिजन

वाङ्मय ग्रहण करते पुलिस महानिदेशक श्री प्रशांत कुमार

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर द्वारा अब तक 439 प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में की जा चुकी है युगऋषि के सम्पूर्ण वाङ्मय सेट की स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर द्वारा संचालित विचार क्रांति अभियान के अंतर्गत दिनांक 24 मई को किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (KGMU) के पैरामेडिकल विज्ञान संकाय के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य रचित 79 खंडों का सेट स्थापित किया गया। यह साहित्य डॉ. नीलम गुप्ता द्वारा अपने दिवंगत सास-श्वसुर की स्मृति में भेंट किया गया। इस अवसर पर उपस्थित छात्र-छात्राओं व चिकित्सकों को अखण्ड ज्योति (हिन्दी) पत्रिका भी भेंट की गई।

कार्यक्रम में विचार क्रान्ति अभियान के संयोजक श्री उमानंद शर्मा, प्रो. अपजीत कौर (प्रो-वाइस चांसलर), प्रो. अनिल निश्चल (डीन), डॉ. पी.डी. सारस्वत, श्रीमती रीता सारस्वत, डॉ. संगीता सारस्वत सहित गायत्री परिवार से वी.के. श्रीवास्तव, देवेन्द्र सिंह और कई गणमान्य उपस्थित रहे।

पुलिस मुख्यालय में

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, लखनऊ द्वारा प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में युगऋषि के वाङ्मय के समस्त खण्डों की स्थापना का भागीरथी अभियान चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत 438वीं स्थापना उत्तर प्रदेश पुलिस मुख्यालय, लखनऊ के केंद्रीय पुस्तकालय में हुई। समर्पित कार्यकर्त्ता बहिन सुश्री रेनू श्रीवास्तव ने अपने माता-पिता स्व. उर्मिला व स्व. बी.डी. श्रीवास्तव की स्मृति में यह साहित्य भेंट किया।

वाङ्मय स्थापना समारोह में पुलिस महानिदेशक श्री प्रशांत कुमार ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि युगऋषि के विचार हमारे अधिकारियों व कर्मचारियों के आत्मबल व मनोबल को ऊँचा उठाने वाले सिद्ध होंगे। अभियान संयोजक उमानंद शर्मा जी ने इस कार्यक्रम को पुलिस विभाग में मूल्यनिष्ठ सोच, आत्मचिंतन और सद्भावना की ज्योति जलाने का एक सार्थक प्रयास बताया।

समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों को अखण्ड ज्योति पत्रिका भी भेंट की गई। इस अवसर पर श्री वी.के. श्रीवास्तव, श्री देवेन्द्र सिंह, श्रीमती सावित्री शर्मा, श्री पंचम सिंह यादव सहित वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्री पूर्णेन्दु सिंह व कई अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर तिरंगा यात्रा निकाली

नई दिल्ली : भारतीय सेना द्वारा ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के उपलक्ष्य में पूर्वी दिल्ली गायत्री परिवार, राजस्थानी समाज, विप्र फाउंडेशन एवं माहेश्वरी कपल क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। यात्रा शक्तिपीठ, विश्वास नगर से प्रारंभ होकर कृष्णा नगर होते हुए छाछी बिल्डिंग चौक पर संपन्न हुई। तिरंगा यात्रा में शामिल सैकड़ों परिजनों ने बड़े जोश और उत्साह के साथ सेना के शौर्य व पराक्रम का अभिनंदन किया।

भगवान समुद्र की तरह एक है। देवताओं और नाम-रूपों की भिन्नता मात्र उसमें उठने वाली तरंगों की तरह है।

प्रान्तीय युवा चिंतन शिविर, छत्तीसगढ़

सात सौ से अधिक युवाओं ने भाग लिया

जन्मशताब्दी वर्ष में सक्रियता के प्राणवान संकल्प उभरे

शान्तिकुञ्ज में 10 से 12 जून 2025 की तिथियों में प्रान्तीय युवा चिंतन शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में छत्तीसगढ राज्य से आए सात सौ से अधिक युवा शामिल हुए। जीवन निर्माण की नई दिशा देने वाले और मन, विचारों को अकूत ऊर्जा से भर देने वाले इस तीन दिवसीय शिविर में भाग लेने के बाद हर युवा समाज के प्रवाह को नई दिशा देने के लिए उत्साहित था।

शिविर के पहले दिन देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने शिविर को संबोधित किया। उन्होंने प्रतिभागी युवाओं को महाकाल स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव से जुड़ने के सौभाग्य का बोध कराया तथा दुनिया के पतनोन्मुख प्रवाह में बहते जाने की बजाय साधना के बल पर अपने व्यक्तित्व को प्रखर और प्राणवान बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने उनके सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों का बोध भी कराया।

जोन समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा जी सहित अनेक वरिष्ठ वक्ताओं ने विविध विषयों से सत्प्रेरणाएँ प्रदान कीं। युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री के.पी. दुबे एवं श्री आशीष सिंह ने युगसृजेताओं के आदर्श और अनुशासन की बड़े विस्तार से चर्चा की। अंतिम दिन विदाई संदेश देते हुए शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने सर्वप्रथम साधना से व्यक्तित्व को प्राणवान बनाने तथा प्रामाणिकता एवं चरित्रनिष्ठा के साथ पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य भाव के साथ समाज की सेवा करने की प्रेरणा दी।

इस शिविर के आयोजन और सफलता में छत्तीसगढ के प्रांतीय युवा समन्वयक श्री ओमप्रकाश राठौर की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्री सुखदेव निर्मलकर, श्री परमेश्वर साहू आदि ने जन्मशताब्दी वर्ष के लक्ष्य का स्मरण कराते हुए संगठित होकर सक्रिय होने का आह्वान किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या छत्तीसगढ़ की तरुणाई को संबोधित करते हुए

- तीन दिवसीय शिविर में हुए विचार मंथन में जिला एवं ब्लॉक स्तर पर युवा शिविरों के आयोजन, बाल संस्कार शालाओं के संचालन सहित प्रायः प्रत्येक आन्दोलन को गति देने के बड़े उत्साहवर्धक संकल्प लिए गए।
- छत्तीसगढ़ युवा आयोग के अध्यक्ष श्री विश्वविजय सिंह तोमर ने एक नैष्ठिक कार्यकर्त्ता की तरह भाग लेते हुए सभी का उत्साहवर्धन किया।
- श्रद्धेया शैल जीजी ने सभी से भेंट की। उनके स्नेहासिक्त वचनों ने मातृवत स्नेह की अनुभूति कराते हुए सबको भावविभोर कर दिया। उन्होंने आश्वासन दिया कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का स्नेह, संरक्षण परिजनों को सदैव आगे बढ़ते रहने की शक्ति सामर्थ्य प्रदान करता रहेगा।

बायें-शिविर के उद्घाटन सत्र में मंचासीन श्री ओमप्रकाश राठौड़, श्री सुखदेव निर्मलकर, श्री विश्वजीत सिंह तोमर (छत्तीसगढ़ युवा आयोग के अध्यक्ष), डॉ. ओ.पी. शर्मा जी, श्री के.पी. दुबे जी। दायें-गंगातट पर ध्यान, प्रार्थना

परम चेतना में विलीन हो गए 'ऋचा' के संस्थापक श्री जगदीश चंद्र पंत

नई दिल्ली। REACHA (Research and Extension Association for Conservation Horticulture and Agro-ecosystem) के संस्थापक, वरिष्ठ प्रशासक और समाजसेवी श्री जगदीश चंद्र पंत का 13 जून 2025 को निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे। श्री पंत जी एक प्रखर आईएएस अधिकारी, समर्पित समाजसेवी और युग निर्माण मिशन के प्रति अत्यंत निष्ठावान गायत्री साधक थे। उन्होंने राष्ट्र सेवा में अद्वितीय योगदान दिया। उन्होंने उत्तर प्रदेश के प्रत्येक स्कूल तक अखण्ड ज्योति पत्रिका पहुँचाई।

स्व. श्री पंत जी की प्रेरणा व मार्गदर्शन में 90 के दशक में गायत्री परिवार द्वारा पूरे देश में राष्ट्रीय जलागम दीपयज्ञों का आयोजन हुआ। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में सन् 1985 से नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविरों का संचालन करते हुए हजारों व्यक्तियों को जीवन साधना की प्रेरणा दी। उनके नेतृत्व में अनेक व्यसन मुक्ति, पर्यावरण संरक्षण एवं संस्कार आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक चेतना जगाई गई।

पू. गुरुदेव-माताजी की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गई उनकी प्यारी बेटी, गुजरात की मालिकिन इंदुबेन अमीन

श्रीमती इन्दु बेन अमीन, वडोदरा। गुज.

गायत्री परिवार वडोदरा की सुदृढ़ आधार स्तंभ श्रीमती ज्योत्सना बेन (इन्दु बेन) देवेन्द्रनाथ अमीन का दिनांक 21 मई 2025 को देहावसान हो गया। वे 93 वर्ष की थीं।

स्व. श्रीमती इंदु बेन अत्यंत कुशल संगठक थीं। अपने मातृवत् स्नेह और व्यवहार से उन्होंने वडोदरा में बहिनों का एक विशाल संगठन खड़ा किया है। वे पहली बार सन् 1977 में शान्तिकुञ्ज में परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी से मिलीं। तभी से उन्होंने गुरुदेव-माताजी को अपने अंतःस्थल में धारण कर लिया। वे जिससे भी मिलतीं, उससे केवल और केवल गुरुदेव-माताजी और मिशन की ही चर्चा करती थीं। हर व्यक्ति से उनका एक ही आग्रह रहता था कि परम पूज्य गुरुदेव जैसी महाकाल की अवतारी चेतना से जुड़ने का सौभाग्य बार-बार नहीं मिलता, जो अवसर मिला है उसकी उपेक्षा करने की भूल न करें।

स्व. श्रीमती इंदु बेन ने वडोदरा में पहला ज्ञानरथ आरंभ किया था। उसके बाद वडोदरा में मिशन का बहुत विस्तार हुआ। उनकी प्रेरणा से सैकड़ों भाई-बहिनों ने अपना जीवन मिशन के लिए समर्पित कर दिया। वडोदरा अश्वमेध यज्ञ के आयोजन में उन्होंने बड़ी भूमिका निभाई थी। परम पूज्य गुरुदेव उन्हें बड़े प्यार से गुजरात की मालिकिन कहकर बुलाया करते थे।

योग नगरी ऋषिकेश में प्रतिष्ठित संतों का समागम

युगऋषि के प्रतिनिधि ने भारतीय संस्कृति एवं संत परम्परा को गौरवान्वित किया

ऋषिकेश। उत्तराखण्ड

ज्येष्ठ पूर्णिमा, 11 जून के पावन दिन ऋषिकेश में मनोरम गंगातट पर स्थित परमार्थ निकेतन आश्रम में एक भव्य धर्म सम्मेलन आयोजित हुआ। यह हरिद्वार, ऋषिकेश क्षेत्र के प्रतिष्ठित संतों और साधकों का एक विलक्षण समागम था, जिसमें गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज के युवा प्रतिनिधि एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी की भी प्रेरणादायी उपस्थिति रही। उन्होंने परमार्थ निकेतन आश्रम के अध्यक्ष मुनि चिदानंद सरस्वती जी, हरि सेवा आश्रम के परमाध्यक्ष स्वामी हरिचेतनानंद महाराज जी, पतंजलि योगपीठ के बाबा रामदेव जी एवं आयुर्वेदाचार्य आचार्य बालकृष्ण जी सहित अनेक गणमान्य संतों और अतिथियों की स्नेहासिक्त उपस्थिति में भारत की संत परंपरा एवं भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करने वाले युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव का संदेश सुनाया। अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से सभी संत-महापुरुषों और साध्वी जी को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर शुभकामनाएँ अर्पित कीं।

प्रतिष्ठित संतों की सभा को संबोधित करते आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

शान्तिकुञ्ज में शिक्षक गरिमा शिविर श्रृंखला सम्पन्न

18 राज्यों से आए 2500 शिक्षक लाभान्वित हुए

> "विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास तभी संभव है, जब शिक्षा के साथ बच्चों को संस्कारयुक्त वातावरण और जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाए। शिक्षकों का यह नैतिक धर्म है कि वे छात्रों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखें, बल्कि उनमें सेवा, आत्मविकास और आत्मविश्वास जैसे गुण भी विकसित करें।"
>
> **- आद. शेफाली पण्ड्या जी**

शिक्षक गरिमा शिविर को संबोधित करतीं आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी

राष्ट्र की नवोदित पीढ़ी का नवनिर्माण अखिल विश्व गायत्री परिवार का एक प्रमुख आन्दोलन है। इसके अंतर्गत शान्तिकुञ्ज द्वारा विगत 35 वर्षों से पूरे देश में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। एक लाख से अधिक विद्यालयों के 50 लाख से अधिक विद्यार्थी प्रतिवर्ष इस परीक्षा में भाग लेते हैं। लाखों शिक्षकों के सहयोग से उन विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति की गौरव-गरिमा का बोध कराकर उसमें निहित उदात्त जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी जाती है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा केवल एक परीक्षा नहीं, बच्चों के व्यक्तित्व को महानता की ओर अग्रसर करने का अभियान है। इसके अंतर्गत प्रतिवर्ष शान्तिकुञ्ज में शिक्षक गरिमा शिविरों का आयोजन होता है, जिनके माध्यम से इन शिविरों में भाग लेने वाले शिक्षकों को बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे विराट अभियान के उद्देश्य और योजनाओं से परिचित कराया जाता है। शान्तिकुञ्ज आने वाले शिक्षक पूज्य गुरुदेव के विचार, शान्तिकुञ्ज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के अनूठे वातावरण से भी बहुत प्रभावित होते हैं।

इस वर्ष 10 मई से 8 जून 2025 की तिथियों में शिक्षक गरिमा शिविर श्रृंखला सम्पन्न हुई। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री रामयश तिवारी, श्री सुधीर श्रीपाद और उनके विभागीय सहायकों के विशेष सहयोग से कुल 7, तीन दिवसीय शिक्षक गरिमा शिविर सम्पन्न हुए। इनमें देश के 18 राज्यों के 2500 शिक्षकों तथा 20 प्रवक्ताओं ने भाग लिया।

गायत्री विद्यापीठ शिक्षण समिति की प्रमुख आदरणीय शेफाली पण्ड्या जी और शान्तिकुञ्ज के अनेक वरिष्ठ वक्ताओं ने इन शिविरों को संबोधित किया, जिन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को अधिक उद्देश्यपूर्ण और प्रभावशाली बनाने की प्रेरणा दी गई। वर्ष 2025 में विद्यार्थियों के बढ़-चढ़कर भागीदारी के संकल्प उभरे। विद्यार्थियों को नैतिक और चरित्रवान बनाने के लिए तरह-तरह की शिक्षणेतर गतिविधियाँ चलाने की प्रेरणा दी गई, संकल्प उभरे।

शान्तिकुञ्ज में गायत्री जयंती पर प्रकाशित नया साहित्य

- **माताओं के लिए मार्गदर्शिका**

माँ की संस्कारशाला (भाग 2, 3 एवं 4)
(जन्म से लेकर 8 वर्ष तक के बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए अत्यंत रोचक, विविधतापूर्ण, रंगीन साप्ताहिक पाठ्यक्रम। इस शृंखला में 12 माह में 52 हफ्तों के पाठ्यक्रम हेतु पुस्तक 'माँ की संस्कारशाला' के कुल 12 भाग प्रकाशित होंगे।)

- **अंग्रेजी भाषा में पुस्तक**

Becoming a better me (Part 1&2)
(बाल कहानियाँ भाग 1 एवं 2)

- **आर्ष साहित्य**

1 मत्स्य महापुराण, 2. विष्णु महापुराण

- **छत्तीसगढ़ी भाषा में 8 पुस्तकें**

अनुवादक : श्री पुनीत गुरुवंश, शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता

- **पेन ड्राईव**

1. अमृतवाणी (पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा)
2. प्रवचन (श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैलदीदी एवं आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी)
3. आडियो बुक, डॉक्यूमेंट्री एवं प्रज्ञागीत

बल तो निर्भयता में है, शरीर में मांस बढ़ जाने में नहीं। - महात्मा गाँधी

गायत्री जयंती पर युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में नवयुग की सृजन चेतना का दिव्य दर्शन

गुरु स्मारकों को नमन करते श्रद्धालु

पूर्व संध्या के उद्बोधन में छाया नवसृजन का उल्लास

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी शोभायात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए

गायत्री जयंती पर बच्चों का विद्यारंभ संस्कार

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में इस वर्ष मनाया गया गायत्री जयंती, गंगा दशहरा पर्व भोर में छाई अरुणिमा की भाँति सतयुग की वापसी की लालिमा और गुनगुनाहट की अनुभूति कराने वाला था। यह अनुभूति श्रद्धेयद्वय द्वारा प्रत्येक परिजन को आशीर्वाद स्वरूप दिए गए शुभकामना संदेश में थी और उनके द्वारा दिए गए पर्व संदेश में भी। तीन दिवसीय कार्यक्रमों में भी नवयुग की सृजन चेतना की दिव्य अनुभूति होती रही। इस युग के वशिष्ठ और विश्वामित्र युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में उनके दिव्य स्नेहानुदानों की स्मृतियाँ भी पर्व संदेश और कार्यक्रमों में होती रहीं। प्रस्तुत हैं पर्व संदेश के कुछ मार्मिक उद्धरण :

गायत्री मंत्र की अकूत सामर्थ्य

• श्रद्धेया शैल जीजी

माँ गायत्री ही एक ऐसी शक्ति हैं, जिसे 33 कोटी देवताओं को प्रसन्न करने वाले मंत्रों का सार कहा जा सकता है। यह वह चाबी है, जिससे सब ताले खुल सकते हैं। जब गायत्री मंत्र को एक ही लय, ताल, गति से जपा जाता है, तो 108 मनकों की माला भी इतनी शक्तिशाली हो जाती है, कि वह शरीर और मन के सारे कोश खोल दिया करती है।

ऋषि विश्वामित्र जी ने त्रिशंकु जी को सशरीर स्वर्ग भेजने के लिए गायत्री की सिद्धि से नए स्वर्ग की सृष्टि की थी। इस युग के विश्वामित्र परम पूज्य गुरुदेव मानवता के उज्ज्वल भविष्य के लिए धरती पर स्वर्ग का अवतरण कर रहे हैं।

आगरा में माताजी की जन्मभूमि पर बनेगा भव्य स्मारक

श्रद्धेया जीजी ने बताया कि आगरा में जिस स्थान पर परम वंदनीया माताजी का जन्म हुआ था, वह जन्मभूमि शान्तिकुञ्ज द्वारा ले ली गई है। उस स्थान पर माताजी का एक भव्य स्मारक बनवाया जायेगा।

गायत्र्येव तपो योगः

• श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

युगसंधि वेला का समय आज अपनी पराकाष्ठा पर है। काल की गति बढ़ते हुए आज अंतिम स्थिति में आ गई हैं। परिवर्तन होना ही है। गायत्री साधना इस बेला में मानव जाति को विषमता के क्षेत्र से निकालने वाली है। इसलिए विलम्ब न करें, शीघ्र माँ गायत्री की शरण में आ जाएँ। गायत्री के प्रत्येक अक्षर को जीवन में उतारने का प्रयास करें। 'गायत्र्येव तपो योगः।' गायत्री ही तप हैं और योग है।

गायत्री की साधना हर किसी को करनी है

• आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

मनुष्य जिस सुख, शांति, आध्यात्मिक अभीप्सा, लौकिक सफलता को पाने के लिए बाहर भटक रहा है, उन सबको अपने अंतःकरण में पाने का मार्ग गायत्री मंत्र है। हमारे प्रथम माता पिता वे जिन्होंने हमें (शरीर को) जन्म दिया और द्वितीय माता पिता 'यज्ञ पिता गायत्री माता' हैं। सद्बुद्धि रूपी गायत्री और सत्कर्म रूपी पिता ही हमें मनुष्यता प्रदान करते हैं। जिस तरह हम श्वास लेते हैं, वैसे गायत्री उपासना को करने की आवश्यकता है। गायत्री की साधना हर किसी को करनी है, उसमें कोई कंफ्यूज़न नहीं, कोई कॉन्फ्लिक्ट नहीं।

अद्भुत मातृत्व की मिसाल थीं परम वंदनीया माताजी

• आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी

ज्ञान और श्रद्धा के समन्वय के बिना शिष्य में समग्रता नहीं आ सकती। परम पूज्य गुरुदेव कहते थे कि यह मिशन केवल तप से नहीं, वंदनीया माताजी के प्यार और आत्मीयता से सींचा गया है। माताजी अद्भुत मातृत्व की मिसाल थीं। माताजी ने एक पिता, एक संस्थापक, एक अभिभावक के रूप में मिशन को खड़ा किया।

भव्य शोभायात्रा

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में गायत्री जयंती, गंगा दशहरा, परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस और विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में अनेक प्रेरणाप्रद कार्यक्रम सम्पन्न हुए। तीन दिवसीय कार्यक्रमों का शुभारंभ 3 जून, 2025 को भव्य शोभायात्रा से हुआ। करोड़ों युवाओं के आदर्श, मार्गदर्शक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्डया जी ने हरी झंडी दिखाकर इस शोभायात्रा को रवाना किया।

प्रज्ञा बैंड की मधुर धुनें व बच्चों की सांस्कृतिक झलकियों से सुसज्जित शोभायात्रा की अगवानी ज्योति कलश रथ ने की। प्रज्ञागीत और नारों ने पूरे वातावरण को उत्साह से भर दिया। शान्तिकुञ्ज से प्रारंभ होकर यह शोभायात्रा देव संस्कृति विश्वविद्यालय पहुँची। वहाँ से लौटकर शान्तिकुञ्ज स्थित गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर आरती के साथ इसका समापन हुआ।

भजन संध्या

3 जून की सायंकाल मुख्य सभागार में भजन संध्या का आयोजन हुआ। गायत्री विद्यापीठ के बच्चों ने अत्यंत मार्मिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस पर उनका भावभरा स्मरण करते हुए बच्चों ने ''आप हिम्मत बँधाकर हमें चल दिए...'' गीत से भजन संध्या का शुभारंभ किया। शांतिकुञ्ज की बहिनों व संगीत विभाग के भाइयों ने अनेक प्रज्ञागीतों के माध्यम से पूज्य गुरुदेव को भावभीनी स्वरांजलि अर्पित की।

अखण्ड जप

परम्परा के अनुसार गायत्री जयंती के एक दिन पूर्व शान्तिकुञ्ज में गायत्री मंदिर एवं उसके समक्ष साधना कक्ष में 24 घण्टे का सामूहिक अखण्ड जप हुआ। चौबीस सौ से अधिक साधकों की इसमें भागीदारी रही, चौबीस लाख से अधिक गायत्री महामंत्र का जप हुआ। इसके अलावा गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' तथा देवात्मा हिमालय में भी मंत्र जप करते हुए हजारों साधकों ने युगदेवता के श्रीचरणों में अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

हजारों संस्कार हुए

शान्तिकुञ्ज अपनी संस्कार परम्परा के लिए सुविख्यात है। प्रमुख पर्वों पर यहाँ एक दिन में दो-ढाई सौ की संख्या में मुण्डन, सैकड़ों की संख्या में बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार होते हैं। गायत्री जयंती पर भी पूरा शान्तिकुञ्ज परिसर संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन का साक्षी बना। गायत्री जयंती पर आए हजारों श्रद्धालुओं ने श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब के श्रीमुख से गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली। चार जोड़ों के आदर्श विवाह भी सम्पन्न हुए।

एक नई क्रान्ति का शुभारंभ

प्रज्ञा अभियान का राजस्थान संस्करण

गायत्री जयंती की पूर्व संध्या पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गुरुपूर्णिमा से पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के 'राजस्थान संस्करण' शुभारंभ किए जाने की घोषणा की। प्रज्ञा अभियान के मध्य प्रदेश संस्करण के बाद पूरे राजस्थान में अपने प्रदेश का संस्करण आरंभ कराने और उसके माध्यम से गुरुचेतना को घर-घर पहुँचाने का अदम्य उत्साह है। शान्तिकुञ्ज में राजस्थान जोन समन्वयक श्री गौरीशंकर सैनी जी की प्रेरणा से राजस्थान जोन समन्वयक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, अलवर की डॉ. सरोज गुप्ता, जोधपुर के श्री जगदीश शर्मा, कोटा के श्री प्रभाशंकर दुबे, बारां श्री मुकेश मीणा जैसे प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने इस दिशा में अविस्मरणीय पहल की है। अलवर की राजगढ़ तहसील की श्रीमती मीना खण्डेलवाल जी ने तो अपनी तहसील के हर कार्यकर्त्ता को प्रज्ञा अभियान का प्रचारक बनाने का संकल्प लिया है। एक तहसील में वे पाक्षिक के 1300 सदस्य बना चुकी हैं, जो एक रिकॉर्ड है।

दीपयज्ञ : पंच तत्वों का पूजन कैसे करें?

गायत्री जयंती और विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में 5 जून की सायं दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। अत्यंत भावपूर्ण प्रज्ञागीतों के साथ सुश्री दीनाबेन त्रिवेदी की टोली ने पावन गुरुसत्ता से जुड़े मार्मिक संस्मरण सुनाते हुए उनके अनुदान-वरदानों की याद दिलाई। साधकों ने भावविभोर होकर गुरुसत्ता को अपनी संकल्प श्रद्धांजलि समर्पित की।

विश्व पर्यावरण दिवस के संदर्भ में संदेश देते हुए सुश्री दीनाबेन त्रिवेदी ने कहा कि पंचतत्व पूजन तभी सार्थक है, जब हम उन तत्वों के रक्षण पर ध्यान दें। पृथ्वी पूजन तभी सार्थक है, जब हम पॉलिथीन एवं जहरीले रसायनों से माता पृथ्वी की रक्षा करें, वृक्षारोपण को एक अभियान की तरह लें। वायु तत्व की शुद्धता के लिए नित्य यज्ञ करें, जल तत्व की शुद्धि के लिए नदियों में अनावश्यक कचरा न बहाएँ, जल की निरर्थक बर्बादी से बचें। साथ ही उन्होंने कहा कि विश्वव्यापी समस्याओं का समाधान संघशक्ति के माध्यम से ही संभव है।

पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा गायत्री जयंती पर्व पूजन की वेला में वृक्षों की पौध का पूजन किया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उद्यान विभाग प्रभारी श्री सुधीर भारद्वाज, श्री के.पी. दुबे आदि गणमान्यों की उपस्थिति में श्रद्धेयद्वय द्वारा पूजित पौधों का रोपण शान्तिकुञ्ज के नए विस्तार क्षेत्र में किया। वहाँ कई पेड़ लगाए गए।

उत्तर प्रदेश में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज से ज्योति कलश रथों की रवानगी के साथ पूरे उत्तर प्रदेश में ज्योति कलश यात्राओं का शुभारंभ हो गया है। दिनांक 6 जून 2025 को जोश और उत्साह से भरे सैकड़ों सृजन सेनानियों की उपस्थिति में युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने प्रथम दो रथों को हरा ध्वज दिखाकर रवाना किया। यह रथ आँवलखेड़ा (आगरा) जोन के 16 जिलों में तथा मुरादाबाद-बिजनौर जोन के 16 जिलों में गाँव-गाँव और नगर-नगर जायेंगे। दिनांक 9 जून को दो और रथ गुरुस्मारकों के समक्ष से युगतीर्थ की दिव्य चेतना का संरक्षण-आशीर्वाद लेकर वाराणसी और अयोध्या उप जोन के जिलों में भ्रमण के लिए रवाना हुए। इस अवसर पर उत्तर जोन प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर एवं कई अन्य वरिष्ठ कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

• यह ज्योति कलश रथयात्रा परम वंदनीया माताजी के जीवन मूल्य, माँ गायत्री की प्राण चेतना तथा परम पूज्य गुरुदेव के नवजीवनदायी विचारों के रूप में सिद्ध ज्योति अखण्ड दीप की दिव्यता से जन-जन को अनुप्राणित करेगी। इन यात्राओं से समाज में सकारात्मकता, एकता, एवं सांस्कृतिक जागरण की भावना को भी बल मिलेगा।

– आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

उत्तर प्रदेश में चार ज्योति कलश रथों के माध्यम से चारों उपजोनों को केन्द्र बनाकर प्रदेश के सभी 75 जिलों का सघन मंथन किया जायेगा। उल्लेखनीय है कि चारों ज्योति कलशों का प्रथम पूजन श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने उत्तर प्रदेश के प्रांतीय सम्मेलन में पूरे प्रांत के हजारों प्राणवान कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में किया था।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**– प्रमोद शर्मा। **पता** :– शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.06.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26